Demand to solve the Problems being faced by Fishermen of Tamil Nadu

SHRIEM SUDARSANANATCHIAPPAN (Tamil Nadu): Mr. Chairman Sir, I want to talk about the problem faced by Tamil Nadu fishermen. Sri Lankan Navy arrested Tamil Nadu fishermen along with mechanished boats and country vallam. They were later released. But the boats were not given to them. About 33 boats are on the shores of Sri Lanka. When they delay in returing to the fishermen, they become useless. Hence, Government of India should take immediate steps to get back the boats belonging to Rameshwaram fishermen. Further, Permanent steps should be taken to avoid recurring occurrence in Kachchatheevu islands. Thank you.

SHRI G.K. VASAN (Tamii Nadu) Sir, I associate myself with the Special Mention made by Shri E.M. Sudarsana Natchiappan

SHRIR SARATH KUMAR (Tamil Nadu): Sir, I also associate myself with the Special Mention made by Shri E M. Sudarsana Natchiappan

PANEL OF VICE-CHAIRMAN

MR CHAIRMAN I have to inform the Members that I have nominated the following Members on the Panel of Vice-Chairman

- 1. Shri Santosh Bagrodia (Rajasthan)
- 2 Shrimatı Sarla Maheshwarı (West Bengal)
- 3 Shri Balawant alias Bal Apte (Maharashtra) and
- 4 Shri Dinesh Trivedi (West Bengal)

सदन के माननीय सदस्यों की यह इच्छा है कि आज का कार्यक्रम, रेल बजट पर डिस्कशन 2.00 बजे बाद में लिया जाए, इसलिए सदन की कार्रवाई 2 00 बजे तक के लिए स्थिगित की जाती है।

The House then adjourned for lunch at twenty-five minutes past twelve of the clock

The House re-assembled after lunch at one minute past two of the clock, MR. CHAIRMAN in the Chair.

THE BUDGET (RAILWAYS), 2004-05

MR CHAIRMAN. Now, let us take up the general discussion on the Railway Budget for 2004-05 Shri Balbir K Punj

[7 July, 2004]

SHRI BALBIR K. PUNJ (Uttar Pradesh): Respected Chairman, Sir, I am grateful to you for providing me an opportunity to speak on the Railway Budget, 2004-05.

Sir, I saw the presentation of the Railway Budget yesterday, heard every word which Shri Lalu Prasadji spoke for over one-hour-and-fifty minutes with rapt attention on television. The Members of the Rajya Sabha are normally entitled to go to the Rajya Sabha Gallery in Lok Sabha and watch the proceedings. But yesterday was a special day, in the sense, that the Treasury Benches were there and the Opposition was absent. There is a reason behind this. Shri Lalu Prasadji, the hon. Railway Minister—I have a lot of affection and respect for him—is a very jovial person and a person who is very close to the land and the people he represents. But, at the same time, we also know that he was Chief Minister of Bihar and he had to resign under very unfortunate circumstances. He was involved in serious cases of corruption and, with the result, there was a CBI inquiry and he was also...(Interruptions)...

SHRI MANOJ BHATTACHARYA (West Bengal): Sir, what is he speaking? . .(Interruptions)...

प्रो॰ राम देव भंडारी (बिहार): सर, इसका डिस्कशन से कोई मतलब नहीं है। ...(व्यवधान)... इसको कार्रवाई से निकाला जाना चाहिए।....(व्यवधान)...

श्री मंगनी लाल मंडल (बिहार): इसको कार्रवाई से निकाल दिया जाना चाहिए। ...(व्यवधान)...

डा॰ कुमकुम राय (बिहार): कोई जरूरत नहीं है।...(ठ्यवधान)... कल आपके जार्ज फर्नान्डीज साहब ...(ठ्यवधान)...

श्री सभापति: पुंज जी, आप रेलवे बजट पर आइए। ...(व्यवधान)...

डा॰ क्मकुम राय: जार्ज फर्नान्डीज साहब ...(व्यवधान)...

श्री मंगनी लाल मंडल: आपको रेल बजट पर चर्चा करनी है या आपको लालू जी पर चर्चा करनी है।...(व्यवधान)...

श्री सभापति: आप बजट पर आइए।...(व्यवधान)...

श्री मंगनी लाल मंडल: केवल रेल बजट पर चर्चा कीजिए।...(व्यवधान)...

डा॰ कुमकुम राय: जार्ज फर्नान्डीज साहब तेलगी के साथ बैठे हुए थे कल। ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: आप बैठ जाइए। ...(ठ्यवधान)... पुंज जी, आप बजट पर आइए। ...(ठ्यवधान)... जाने दें इसको कि कौन कहां था। आप लोग बैठ जाइए।

पुंज जी, बोलिए, शुरू करिए, लेकिन आप बजट पर आइए।

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE (West Bengal): Sir, let him speak on the Railway Budget ...(Interruptions) ...

श्री मंगनी लाल मंडल: सर , उसको कारवाई से निकाल दिया जाए।

श्री सभापति: निकालूंगा तो किन-किन को निकालूंगा, आप भी क्या-क्या बोल गए।

SHRI BALBIR K. PUNJ: Sir, I can understand the sentiments of my friends on the other side. After all, they have to show their loyalty to Laluji. And, I would not have touched this subject had Laluji confined himself to the railway matters yesterday in his speech. Those of us who heard him speak they saw that he repeatedly derailed from the Railway Budget so many times and when he derailed, he tired to make fun of the Opposition which was not present. He swore his loyalty to Smt. Sonia Gandhi, which was not a part of the Railway Budget. And if I mention ... (Interruptions)... If I mention the circumstances as to why we were absent, why we boycotted the Railway Budget yesterday, ...(Interruptions)...

श्री सभाषति: इसमें आपत्ति क्या है आपको? इसमें आपको क्यों चिढ़ हो रही है ...(व्यवधान)...

एक माननीय सदस्य: बजट का बहिष्कार किया गया ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: वह तो कह रहे हैं कि सोनिया जी के प्रति लायॅल्टी दिखाई तो आपको ऐतराज क्यों हो रहा है ...(व्यवधान)...

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE. He is referring to the Lok Sabha proceedings here. ...(Interruptions) .. Just a minute. ... (Interruptions) Sir, can he refer to the Lok Sabha proceedings in this House? ...(Interruptions)

MR. CHAIRMAN: No. ...(Interruptions)...

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: He is referring to the Lok Sabha proceedings. ...(Interruptions)...

MR. CHAIRMAN: I will take note of it (Interruptions)...

SHRI BALBIR K. PUNJ: Mr. Chairman, Sir, if it is all right to mention Mrs. Sonia Gandhi's name fifty times while presenting the Railway Budget,

then, while speaking on the Railway Budget, I can also surely mention that name a couple of times. ... (Interruptions)...

श्री सभापति: आप बजट पर बात शुरू करिए ...(व्यवधान)...

डा. कुमकुम राव: हम किस पर चर्चा कर रहे हैं? क्या सोनिया जी पर चर्चा हो रही है ...(व्यवधान)...

प्रो॰ राम देव भंडारी: सभापति महोदय, इनको विषय पर बोलने के लिए कहा जाए ...(क्यवधान)...

श्री सभापति: आप बैठ जाओ ...(व्यवधान)...

प्रो॰ राम देव भंडारी: ये पढ़े-लिखे विद्वान हैं, इनको विषय पर बोलना चाहिए ...(व्यवधान)...

MR. CHAIRMAN: I agree with you. ...(Interruptions)... I agree with you. ...(Interruptions)... বঁঠ জাহ্ ...(স্বেমান)...

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: Sir, I request you to please see the Lok Sabha proceedings that he is referring to. ...(Interruptions)...

SHRI BALBIR K. PUNJ: In fact, Mr. Chairman, Sir, I am not mentioning any names just like that. While I am speaking on the Railway Budget, I also have to mention the names and the things which the hon. Railway Minister had very frequently mentioned in his speech yesterday....(Interruptions).... If my friends had to object, they should have objected yesterday....(Interruptions)....

SHRI SANTOSH BAGRODIA (Rajasthan): Sir, I want your ruling.....(Interruptions).....Can he mention names?(Interruptions)....
Let us know it; otherwise, everybody will start mentioning all the names of Members of the other House. ...(Interruptions).... Please, Sir, we want your ruling.

MR. CHAIRMAN: There is no need for any ruling. ...(*Interruptions*)... জীৱিত, জীৱিত ...(ক্ষেৰভান)...

SHRI BALBIR K. PUNJ: Mr. Chairman, Sir, anything which was mentioned and which was referred to by the Railway Minister yesterday in his speech, I have the full right to comment on that, I intend to come back to it later. ...(Interruptions)...

श्री सभापति: मेरी बात सुन लीजिए। पुंज साहब उन्होंने बजट स्पीच की कॉपी सदन के पटल पर रखी है, आप उस आधार पर बोलिए. ...(व्यवधान)...

SHRI BALBIR K PUNJ You get the record . (Interruptions).. You get the record and see what the Railway Minister had to say about the Congress President and what he had to say about the Opposition ...(Interruptions)..

श्री संतोष बागडोदिया: इनसे नाम विदड़ों करवाइए ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: पुंज साहब बोलिए।

श्री बलबीर के. पुंज: मैं भी रेल बजट पर बात कर रहा हूं पर जब रेल मंत्री कल रेल बजट प्रैजेंट कर रहे थे तो उसमें सोनिया जी का स्तुतिगान भी कर रहे थे।...(व्यवधान)...

कार्मिक लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री सुरेश पचौरी: सभापति महोदय, मेरा आपसे विनम्र अनुरोध है कि ...(व्यवधान)...

SHRI BALBIR K PUNJ Sir, I am not yielding. .. (Interruptions) .

SHRI SURESH PACHOURI. Sir, with your permission .(Interruptions).

MR. CHAIRMAN There is a point of order

श्री सुरेश पचौरी: आदरणीय सभापित महोदय, मेरा आपसे विनम्न अनुरोध है कि इस सदन की यह परंपरा रही है कि यहां के माननीय सदस्य, दूसरे सदन के माननीय सदस्यों के बारे में इस प्रकार का कोई उल्लेख नहीं कर सकते, जिस ढंग से इन्होंने व्यंग्यात्मक उल्लेख किया है। मैं आपसे अनुरोध करना चाहूंगा कि इसे सदन की कार्यवाही से विलोपित करें और माननीय सदस्य को कृपापूर्वक निर्देशित करें कि वह विषय के संबंध में ही बात करें तो ज्यादा उचित होगा।

SHRI BALBIR K PUNJ. Mr Chairman, Sir, I am only referring to the speech which the hon Railway Minister had made while presenting the Railway Budget yesterday.

श्री सुरेश पचौरी: सभापति महोदय, यह इस सदन की परंपरा रही है और इस प्रकार के डॉयरेक्शंस पीठासीन अधिकारियों ने दिए हैं ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: ज्यादा अच्छ यह होगा कि आप पहले रेल बजट पर चर्चा करें और बीच में यदि कोई रेफरेंस आता हो जो आपत्तिजनक न हो, उसे आप कहें। श्री एस. एस. अहलुवालिया (झारखंड): महोदय, आपत्तिजनक की बात नहीं। सदन के सामने एक बहस है और ये जो परंपराएं बनी थीं, तब यह लाइव टेलीकास्ट नहीं होता था, पूरी दुनिया के लोग नहीं देखते थे। पूरे भारत ने, पूरी दुनिया ने इस भाषण को देखा है, सुना है ...(व्यवधान)...

श्री सुरेश पचौरी: तो इसका मतलब यह है कि इस सदन की जो परंपरा रही है, उसको आप तोड़ना चाहते हैं ...(व्यवधान)...

श्री एस.एस. अहलुवालिया (झारखंड): लालू प्रसाद यादव जी ने कहा कि एन.डी.ए. को बहिष्कार करने से पहले सोनिया गांधी जी को नमस्कार करके जाना चाहिए था, प्रणाम करके जाना चाहिए था...(व्यवधान)... इसका विरोध यहां नहीं होगा, इस सदन में नहीं होगा तो कहां होगा, विदेशों में होगा ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: आप लोग प्रणाम की बात क्यों कहते हो, पहले बजट के बारे में कुछ कहिए तो सही ...(व्यवधान)...

श्री एस,एस. अहल्वालिया: बजट के बारे में तो बात ही हो रही है।...(व्यवधान)...

श्री सुरेश पचौरी: सर, हमारा आपसे अनुरोध यह है कि इस सदन की हमेशा से यह परम्परा रही है चाहे 1967 की या 80 के बाद की कि अगर लोक सभा सदस्य के नाम का उल्लेख किया है तो उसको विलोपित किया गया। आप कृपापूर्वक विलोपित करें। माननीय सदस्य रेलवे बजट पर ही चर्चा करें।

श्री सभापति: देखिए, माफ करना, बहुत सदस्यों ने बहुत कुछ कह दिया, वह तो छोड़ दीजिए। विलोपित नहीं रिकार्ड में रहना चाहिए ताकि आगे दुनिया देखे तो सही कि हम किस तरह से बोलते हैं ताकि अंदाज तो हो। बहुत शब्द निकालने पड़ेंगे। इसलिए मैं आपसे रिक्वेस्ट करना चाहूंगा कि पहले रेल बजट ...(व्यवधान)...

SHRI BALBIR K. PUNJ. Mr. Chairman Sir, I fully accept the concern which you have shown. But let me remind my friends on the other side that Smt. Sonia Gandhi has also enjoyed the status of Cabinet Minister. And since she enjoyed the status of a Cabinet Minister, we can refer to the Cabinet Minister...(Interruptions)...

MR. CHAIRMAN: No, she is not a minister ... (Interruptions)... She is not a minister ... (Interruptions)... she is not a minister ... (Interruptions)...

प्रो॰ राम देव भंडारी: सर, इसका भी संबंध इस विषय से नहीं है। यह बार-बार विषय से बाहर जाकर बात कर रहे हैं।...(व्यवधान)...

श्री संतोष बागड़ोदिया: अभी नए मेंबर्स की ट्रेनिंग हो रही है पहले उसमें भेजिए इनको। ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: आप तो सीधा बजट पर आइए।...(व्यवधान)...

प्रो॰ राम देव भंडारी: उसमें बोलने के लिए कुछ है ही नहीं। क्या बोलेंगे?

SHRI BALBIR K. PUNJ: And, Sir, I would also refer to ...(Interruptions)...

श्री समापति: आप तो बजट पर ही बोलिए ...(व्यवधान)...

SHRI BALBIR K. PUNJ: Sir, coming back to the budget proposals ...(Interruptions)..., Shri Lalu Prasad was very humble, he very gratefully accepted ...(Interruptions)...

श्री सभापति: ज्यादा अच्छा होगा कि आप लालू जी का नाम नहीं लें। रेल मंत्री को सम्बोधित करें।

SHRI BALBIR K. PUNJ. Sir, the Railway Minister was very humble-which is his usual temperament—he referred to the guidance he had received from the Prime Minister. He also gratefully acknowledged the help he had received from the Congress President, Shrimati Sonia Gandhi. Now, it raises a basic issue that if he had discussed the budget proposals with Shrimati Sonia Gandhi before the presentation of the budget to the Parliament, has he been sworn to secrecy to the Constitution, or did he swear by ... (Interruptions)...

श्री सभापति: ऐसी बात कोई नहीं आई है।...(व्यवधान)... माननीय सदस्य, रेलवे के बजट पर बोलें तो ज्यादा अच्छा रहेगा।...(व्यवधान)

SHRI MOTILAL VORA (Chhattisgarh): He is not at all clear ...(Interruptions)... Sir, this is a very serious matter ...(Interruptions)... This is a very serious matter ...(Interruptions)... Mr. Chairman Sir, he should be restrained from speaking .(Interruptions)...

SHRI BALBIR K. PUNJ. But, Mr. Chairman, Sir, this House has the right to know whether the Railway Minister has discussed the budget proposal, as he had revealed in the other House, with Shrimati Sonia Gandhi...(Interruptions)... before presenting the Budget in the House or not? This House has the right to know, Sir ...(Interruptions)...

RAJYA SABHA

SHRI SANTOSH BAGRODIA: He can discuss it with anybody in the world ... (Interruptions)... he can discuss it with anybody. Don't you know this? ... (Interruptions)...

श्री सभापतिः रूल्स क्लीयर हैं। "Incidents that happen in Lok Sabha need not be referred to in the Rajya Sabha." आप सीधे बजट पर बार्ते करिए।

SHRI BALBIR K. PUNJ: Sir, I am not talking of any incident. I am referring to the speech of the Railway Minister ... (Interruptions)...

SHRI S. S. AHLUWALIA: This is regarding the presentation of the Railway Budget in the Lok Sabha ... (Interruptions)...

SHRI BALBIR K. PUNJ: That way we are discussing the Railway Budget ... (Interruptions)...

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: He is always referring to the proceedings of the other House. ... (Interruptions)...

SHRI BALBIR K. PUNJ: Sir, the presentation of the Railway Budget in the Lok Sabha was seen by the entire world ...(Interruptions)...

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: So what? ...(Interruptions)... So far as this House is concerned, this is a wrong method. A wrong precedent has been set up. We cannot refer to the Lok Sabha proceedings in this House ...(Interruptions)... I would like the Leader of the Opposition to enlighten us as to whether he is correct or I am correct ...(Interruptions)... I would like the Leader of the Opposition to enlighten us, not Shri Ahluwalia. I would request the Leader of the Opposition to enlighten us whether he can refer to the proceedings of Lok Sabha. This is my challenge.

SHRI S.S. AHLUWALIA: Sir, he has asked a question whether ... (Interruptions)...

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: Sir, the proceedings of Lok Sabha cannot be discussed in this House. We are not going to be 'Ahluwaliaised'. We want the Leader of the Opposition to discuss this matter.

We want the Leader of the Opposition to clarify. (Interruptions)....

श्री सभापति: इनको बोलने दीजिए।...(व्यवधान)...

श्रीमती सरला माहेश्वरी (पश्चिम बंगाल): सभापति महोदय, इनके पास रेल बजट पर बोलने के लिए कुछ नहीं है।...(व्यवधान)...

श्री राजू परमार (गुजरात): सर, आपके कहने के बावजूद भी ...(व्यवधान)...

SHRI S.S. AHLUWALIA: He is putting a question: Was the draft Budget shown to Sonia Gandhi or not? What is wrong in it? ...(Interruptions)... Let the reply come from the Railway Minister. ...(Interruptions)... Let the reply come from the Railway Minister. ...(Interruptions)...

SHRI SANTOSH BAGRODIA: He has written letters to every Member of Parliament. He has taken the advice of every Member of Parliament. ... (Interruptions)....

SHRI S.S. AHLUWALIA: No, no ... In the proceedings he has mentioned. (Interruptions)....

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: Which proceeding he is referring to? ... (Interruptions)...

श्री सभापति: आप बैठिये। आप बैठिये। ...(व्यवधान)... आप कैसे इस इन्फेरेंस पर पहुंचे कि उन्होंने बजट दिखाया है? ...(व्यवधान)...

SHRI S S. AHLUWALIA: Sir, while presenting the Railway Budget, he said that he was thankful to Sonia Gandhi that due to her blessings. ...(Interruptions)... he could present good Budget (Interruption)...

श्री सभापति: नहीं, इससे यह इन्फेरेंस नहीं निकलता है।...(व्यवधान)... माफ करना इससे यह इन्फेरेंस नहीं निकलता है कि बजट दिखाया गया है।...(व्यवधान)...

श्री राजू परमार: लालू जी ने आभार प्रकट किया है। ...(व्यवधान)...

SHRI S.S. AHLUWALIA: No. Sir, this is a question. .. (Interruptions)...

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: It is a wrong precedent. ...(Interruptions)... I stick to my point of order . (Interruptions)...

SHRI S.S. AHLUWALIA: What is wrong in it? ...(Interruptions).. The draft Budget can only be shown to the Cabinet member. ...(Interruptions)... This is a very genuine question. ...(Interruptions)...

श्री के॰ रहमान खान (कर्णाटक): अहलुवालिया जी, क्या आपके पास और कुछ बोलने के लिए नहीं है? ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: आप बैठिए तो सही।...(व्यवधान)... एक मिनट। आप सब बैठिए।... ..(व्यवधान)... आप बैठ जाइये।आप बैठ जाइये।...(व्यवधान)... यह कैसे इन्फरेंस निकलता है? ...(व्यवधान)... सरला जी, आप बैठिए।...(व्यवधान)...

श्री रिव शंकर प्रसाद (बिहार): प्रफुल्ल पटेल जी, सीपीएम के दफ्तर जाते हैं। ...(व्यवधान)...

RAJYA SABHA

श्री सभापति: वहां जाना कोई गुनाह है क्या? ...(व्यवधान)... एक मिनट। मैंने आप लोगों के भाषण सुने हैं, जिन भाषणों में आपने यह कहा है कि हमने अटल जी से सलाह करके यह किया है।...(व्यवधान)... अटल जी से कोई दिक्कत नहीं है।...(व्यवधान)... अगर सोनिया गांधी का नाम लिया है। सोनिया गांधी की कृपा से कह दिया है तो यह बजट दिखाने का काम नहीं है। मैं इस पाइंट पर एग्री नहीं करता हूं।...(व्यवधान)...

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: We are not discussing all these things. .. (Interruptions)...

श्री सभापति: आप बोलने दीजिए।...(व्यवधान)...

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया: सर, ड्राफ्ट बजट केवल केबिनेट में दिखाया जाता है किसी और को नहीं।...(व्यवधान)...

SHRI BALBIR K. PUNJ: Mr. Chairman, Sir, I respect the ruling which you have given that an incident which took place in the other House can't be discussed here. Then, how can the Budget presented in the Lok Sabha be discussed in Rajya Sabha?

MR. CHAIRMAN: Only copies are laid on the Table of the House ...(Interruptions)...

श्री सुरेश पचौरी : सर, रेल बजट इस हाउस में रखा गया है।...(व्यवधान)...

श्री दीपांकर मुखर्जी: यही सब बाहर लिखते होंगे ? यह ज़र्नेलिस्ट हैं, विद्वान हैं। 6 साल में इतना भी नहीं सीखा कि बजट ...(ञ्यवधान)... इतने बड़े विद्वान हैं। ...(ञ्यवधान)... ऐसे ही ज़र्नेलिज्म भी करते रहे होंगे। ...(ञ्यवधान)... We are sorry on his behalf. We apologise on his behalf to you that after five years, he is not aware how Budget papers are laid.

SHRI BALBIR K. PUNJ: We discuss the Budget here because that has been laid on the table of the Rajya Sabha, but at the same time, when the Budget was presented . .(Interruptions)...

श्री सभापति : मैं हाउस एडजर्न कर दं क्या? ...(व्यवधान)...

श्री एस. एस. अहल्वालिया: आप लीडर ऑफ दी हाउस...

श्री सभापति : नहीं । लीडर ऑफ दी हाउस क्या होता है? आप बोलिए न। पेज 166 -राज्य सभा रूलिंग्ज एंड ऑबजरवेशंस आप देखिए उसमें on 21st of April, 1987, while Prof Chandresh P. Thakur was making a speech on the short Duration Discussion on the purchase of guns from Bofors of Sweden, he referred to what happened in Lok Sabha, the previous day Disallowing the Member to make any reference to what has happened in the other House, the Chairman observed, "That is not necessary. I want to tell the Member that except points of policy, etc., you do not discuss what happened in the other House in this House."

SHRI S.S. AHLUWALIA: We are discussing a policy matter.

MR. CHAIRMAN: That is not a part of policy.

SHRI S.S. AHLUWALIA: We are discussing a policy matter .. (Interruptions).

श्री सभापति : उन्हें बोलने दो। ...(व्यवधान)... आप रेलवे बजट पर आइए। ... (व्यवधान)...

श्री राजू परमार: अहलुवालिया जी, बहुत हो गया। अब बहुत हो गया, आप बैठ जाइए। एक माननीय सदस्य: उनके पास बोलने के लिए कुछ नहीं है।

SHRI BALBIR K. PUNJ. Mr. Chairman, Sir, if an hon. Minister makes a statement in either of the Houses, it can be discussed in either of the Houses.

श्री संतोष बागड़ोदिया : आप बाद में बोलिए, पहले बजट की कॉपी ले लीजिए। आपने बजट देखा नहीं है।

श्री सभापति : देख लिया है, बजट देख लिया है। सब कागज लेकर आए है।(व्यवधान).

श्री बलबीर के. पुंज: वह तो सिर्फ सोनिया जी ने देखा है। वह तो लालू जी ने भी नहीं देखा, सिर्फ सोनिया जी ने देखा था।...(व्यवघान)...

श्री सभापति : आप बोलिए न।

श्री बलबीर के. पुंज: वह तो सिर्फ सोनिया जी ने देखा था।

श्री सभापति : यह ठीक नहीं है।..(ठ्यवधान)...

श्री सुरेश पचौरी : आपके जमाने में आपने सबको रेलवे बजट दिखाया था? ...(व्यवधान).

श्री राज् परमार : क्या बात कर रहे हो? ...(व्यवधान)...

श्री सभापति : आप बोलिए न।

[7 July, 2004]

7

प्रो. राम देव भंडारी: आपके अध्यक्ष नोट लेते हुए देखे गए। आपके मिनिस्टर नोट लेते हुए देखे गए। आपके एक अध्यक्ष ने दलित की जमीन हुड़प ली।

SHRI BALBIR K. PUNJ: Mr. Chairman, Sir. this Railway Budget was the first financial Bill which was presented by Dr. Manmohan Singh's Government. Dr. Manmohan Singh is known for his honesty and clean image. In fact, he is also known as the father of reforms in this country. He was instrumental in dismantling the socialist wise-like grip, which had strangulated the economy for 40 years and a creed, which has propagated by our friends in the CPM and the Congress. But, Sir, it is very ironical that Laluji should have been the first one to present a financial Bill of Dr. Manmohan Singh's Government. While Dr. Singh is a man with a clean and honest image, Lalu Prasad Yadavji, the Railway Minister is a man who has a tainted reputation. The man had been involved in many corruption cases...(Interruptions). He has been arrested and...(Interruptions)... Sir, a person who was thought to be unfit as the Chief Minister, how could he be considered as a suitable person to present the Budget? Then, Sir, as I said earlier, Dr. Manmohan Singh is the father of reforms in this country. but if you look at the Railway Minister's Budget, it has the Lalu stamp all over, but has no reformist angle. It is basically a populist Budget where lot of things have been promised to a number of people, but nobody knows from where these resources are going to come from. Sir, I would like to compare Laluji's Budget with a sort of box of burfi which has lot of sweeteners in it, very little khoya and a sloppy packaging. Sir, a lot have been said about the use of Khadi and Kullars. I ask my colleagues and friends from the other side, "When you get into a railway train, what is your first concern?" What is the first concern of any passenger for that matter? The first concern is whether the journey is going to be punctual. comfortable and safe. You don't think whether you are going to drink your tea in a kullar or a ceramic cup or a glass or a plastic cup. You don't think whether you are going to have a mattha, chhaach or a coffee or a tea. People have various choices, and, I think, every choice is as good as the other. Now, regarding the safety angle, though he has relied heavily on the Khanna committee Report, but if you look at it seriously, it is nothing more than a lip service. Sir, it may be just a coincidence that after the new Railway Minister has taken over, there has been a spate of dacoities and that too particularly in the State from where he comes. Railway journey has become a risky proposition. In fact, my advice to all the railway

passengers would be to go in for a heavy insurance before they get into a train. You are talking about kullars, but you don't know whether your life is going to be safe; you are talking about chhaach but you don't know from where the next bullet is going to come; you are talking about khadi, but you don't know that very khadi may be used to strangulate you while you are travelling by the people who get into the train all the time. In fact, he has been the Railway Minister only for 50 days and may be on a average --I have not done the calculation, but if you go by the media report— it appears that there is a dacoity almost a day. So, there is no concern on the safety except dusting up the old Khanna committee Report which has been reiterated year by year. As I said earlier, it may be just a coincidence that the incidence of crime has gone up heavily after Laluji has become the Railway Minister. Somebody was saying "जब सहयो भए कोतवाल तो अब डर काहे का''! I don't know whether this saying holds good or not. In fact, if you recall the one-hour-fifty-minute speech, probably the longest speech that any Railway Minister has made, it looks more like a nautanki. It was an entertainment show for the masses. I will make a suggestion to hon. Dr. Manmohan Singh, maybe he considers the suggestion seriously, to redesignate Lalui as the Minister for entertainment and not as the Minister for Railways.

श्री सभापित : ऐंटरटेनमेंट और रेलवे, दोनों कामों को एक मिनिस्टर नहीं कर सकता।

SHRI BALBIR K. PUNJ. Sir, you are the Chairman and it is the prerogative of the Chairman . (Interruptions)

प्रो. राम देव भंडारी: सर, उन्हीं के ऐंटरटेनमेंट की वजह से उस तरफ हैं आज ये लोग। श्री सभापति: बैटिए, बैटिए।

SHRI BALBIR K PUNJ Sir, as I said earlier, nobody knows from where the money is to come. The schemes have been promised—August Kranti, that kranti, this train, that train. If you look at the resources, there is a total mismatch between the resources which are available with the Railways and the announcements which have been made by the Railway Minister. Sir, it is striking that merely one paisa. (Interruptions).

श्री रिव शंकर प्रसाद: आदरणीय सभापित जी, एक व्यवस्था का सवाल है। आदरणीय रेल मंत्री तो उपलब्ध नहीं हैं और रेल विभाग का कोई अन्य मंत्री भी उपलब्ध नहीं है।

कुछ माननीय सदस्य : हैं न, ये बैठे हैं।

श्री संतोष बागड़ोदिया: आप तो इतना हल्ला कर रहे थे जब इंट्रोडक्शन हो रहा था, इसलिए आपने पहचाना नहीं।

श्री सभापति : ये केवल लालू जी को ही पहचानते हैं। बोलिए पुंज जी।

SHRI RAVI SANKAR PRASAD. All right, I hope he is following this

SHRI BALBIR K. PUNJ: Chairman, Sir, as I am saying, there is a total mismatch between the commitment and the resources which are available with the Railway Minister. Sir, it is striking that merely one paisa of one rupee earned by the Railways goes to the development of the system and two paise to the safety fund. That means out of 100 paise, only three paise are available for the renovation of the system and for the safety of the passengers. Some 31 paise is spent on wages, 17 paise on fuel and 14 paise on pensions and other benefits.

Sir, the Railways have gone in for Rs. 14,498 crore outlay for the year, with just Rs. 2,878 crores from the internal resources. Apart from the allocations from the General Budget, the Railways will resort to market borrowings of Rs. 3,400 crores. Sir, of coruse, this trend has been continuing over the last few years, but the quantum of the borrowings running into Rs. 3,400 crores without a matching arrangement to put this money to productive use does not say well for the health of the Railways.

[THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA) in the Chair]

Sir, the Railways had orginally set a target of 540 million tonnes of originating freight, which was later revised to 550 million tonnes in the interim Budget an even this higher target has been exceeded due to buoyancy in the economy. In fact, this goes to the credit of the earlier Government, the NDA Government, and also to the Railway Minister that we have done very well both in terms of the freight and passenger movement and the revenues and the targets have been exceeded. The growth in freight has been over 5 per cent per annum in the past two years and that of passenger traffic around 3 per cent. Considering the limited scope available for curtailing expenditure—most of it is or staff, pension and fuel-the reductions claimed year after year calls for close scrutiny to assure us that it is not at the cost of maintenance and replacement of assets. Sir, I was talking about the numerous schemes which the hon Railway Minister has announced. If you go at the track record, and when I use the world 'track record' the pun is intended and then you realise that

most of the schemes are likely to remain on paper and just bravado. Sir, if you remember a fortnight back the hon. Railway Minister had announced a new scheme with a lot of hype and media fanfare that air-conditioned coaches will leave from Patna laden with vegetables and reach New Delhi and that new avenues of prosperity will be opened for the farmers of Bihar and also the people of Delhi will be getting fresh vegetables. Sir, only one train-the very first train which was flagged off by Shri Lalu Prasad Yadav and. I think, it was on 23rd June-has come and nobody knows what has happened later on. The entire scheme has fallen off the tracks. Was any market survey done before the scheme was launched? Were farmers contacted and the estimates for wage and the amount of vegetables available in Patna for shipment to Delhi found out? Did anybody do any study as to how much time it takes to ship the vegetables in air-conditioned containers from Patna to Delhi and whether the Delhi traders were willing to buy? This entire scheme has just proved a flop. Sir, if you look at the Budget Speech, therein a proposal has also been made for setting up a plant to manufacture wheels at chapra. We already have two plants manufacturing steel wheels at Bangalore and Durgapur. Was any study done whether we can meet our demand for increased number of wheels by increasing the capacity, by augmenting the capacity at Bangalore and Durgapur? Has any study been done? Have specialists been consulted whether we can make good quality wheels which will be good enough for the Railways' use by recycled steel? There are no answers given to these questions. In fact, the hon. Railway Minister has by just waving a magic wand put up schemes and made annoncements without sharing with the House, or with the country, as to what are the bases for these projections and on what basis this investment which may virtually be of Rs. 1,000 crores, has been committed to the people living in Chapra. If you look at it. Sir, we already have schemes worth Rs. 40,000 crores, which are still to be implemented, and they have been stalled for want of funds. In fact, one study shows that it will take about 50 years, at the present pace, to complete those schemes! You don't have resources to complete the existing schemes; you are short of funds, with the result that whatever little money that you have invested in those schemes is going waste, and you are committing your self an expenditure of almost Rs. 1,000 crores for putting up the plant at Chapra¹ In fact, Sir, the way the new Railway Minister has conducted himself, that the plant has been put up in chapra the airconditioned coaches for carrying vegetables has to start from Patna, it appears that, if the Railway Minister is going to announce tommorrow a

train from Delhi to Jammu, maybe, it will have to go via Patna or Gaya! Because the Railway Minister seems to be acting in a manner that it will benefit has party in the next State Assembly elections! Are we going to run the Railways of the country, keeping in mind the State Assembly elections? Is it going to be the criterion? This is a question which needs to be answered.

The state of rail travel in Bihar is well described in a newspaper report of a train from Patna to Madhepura, from where the hon. Minister has been elected. It says: "278 kms., 14 hours, 2 trains, and one nightmare". That is the heading." No lights in the train because batteries have been stolen. No tickets being issued because the computer is permanently out of order. The poor are served in the train by the ticket checking staff themselves issuing the "ticket" with an addition of Rs. 50/-per ticket for the "Privilege"." That means under-the-table payment by the poor of Bihar for getting a ticket from Patna to Madhepur. Now, Sir, it raises a basic issue. If that is the model, should we think in terms that this model is going to be repeated all over the railways?

Sir, there is not even a single word mentioned by the hon. Minister about the trains which are stopped unscheduled at various places. Then, about the recruitment of GRP men "in-house", an announcement has been made. How is the recruitment going to be made? And why only the recruitment of GRP men? Are we going to absolve the State Government of its responsibility to maintain law and order along the railway tracks in the trains? Or, are we bringing them in for their responsibility? Sir, the hon Railway Minister said that he wants to make the Indian Railways(Interruptions)... Mr. Vice-Chairman, Sir, please hear me.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA): Go ahead. I am listening to you.

SHRI BALBIR K. PUNJ: Okay, Sir.

Mr.Vice-Chairman, Sir, the hon. Railway Minister claimed in this speech that he wants to make the Indian Railways the number one railways in the World. We all want that. Sir, I was talking about the track record of the hon. Railway Minister. I gave an illustration as to how that the "Vegetable Special",had been handled, and I would like to draw your attention as to how the Bihar State owned the Road Transport Corporation buses.

श्री एस. एस. अहलुवालिया: उपसभाध्यक्ष जी, मैं एक चीज की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। कुछ दिनों पहले राज्य सभा में हमको एक ऍटिकेट की किताब भेजी गयी है और उसमें कहा गया है कि अगर चैयर किसी सदस्य को बुलाए तो वह वहां जाए अन्यथा कोई भी सदस्य चेयर के पास जाकर बात न करे। अगर यह वार्तालाप का सिलसिला चलता रहेगा तो यह जो ध्यानाकर्षण करने की बात होती है कि चेयर से सीधी बात की जाए, वक्ता चेयर से सीधी बात करे, तो वह चेपर से बात नहीं कर सकता।

उपासभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया) : ठीक है, बोलिए।

SHRI BALBIR K.PUNJ · Sir, the train of my speech is subjected to the chain pulling by the people from the other side of the House and this side also.

उपासभाष्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया) : आप तो बहुत अच्छे वक्ता हैं, आप को कोई इन्ट्रप्ट कर ही नहीं सकता। आप बोलिए।

SHRI BALBIR K. PUNJ: Sir, the hon. Railway Minister claims that he is keen to make the Indian Railways as the number one railway service in the world. Now, if you go by the track record, you will find that the Bihar State road Transport service, a service which has been under his domination for a decade-and-a-half, has virtually been reduced to rust and waste. Virtually, no road service exists in Bihar today. Now, if that is the track record, how seriously can we take the Railway Minister's claim that he plans to make the Indian Railways as the number one railways in the world? (Interruptions)

Mr. Vice-Chairman, Sir, the rhetoric or *nautanki* of making the Indian Railways into number one will fool no one. There is no proposal to reduce the expenditure, increase the revenue or improve the funds the Railways could generate to modernise, repair and restructure the largest transport system. Instead, the whole approach is to reduce the system into a "Ma-Bap Gravy service" where the Railway Minister sits like an old *seth* throwing freebies everywhere. But there is nothing like free lunch. If you take out from one pocket, naturally that pocket will come down. In fact, he has also claimed that his "Ma-Bap" approach has been blessed by the hon. Prime Minister. I don't know whether that is correct or not.

Sir, a starting instance of total irresponsibility is the attitude towards the Golden triangle Project. The Railway Budget Speech does not say anyting about it. Yet, we all know that the scheme is of vital importance to

[7 July, 2004]

1

the Railways. Over 65 per cent traffic and major reveue come from that golden Triangle. The NDA Government had committed to invest Rs. 15,000 crores to improve its capacity. Now, I don't know whether this new Government has abandoned it in favour of *kulhars* or khadi or whether it continues to be on the agenda of the new Government because the Railway Budget Speech seems to be silent about it.

Sir, if you look at the Railway Budget Speech, you will find that most of the good schemes have been lifted bodily from the proposed scheme of the NDA Government. The anti-collision device, the early warning device. etc., were on test in the last few years. The Railway Minister speaks of "Village on Wheels". But he does not give us any figure as to what would be the cost of passengers. In fact, he says whatsoever the passengers can afford. Now, what is going to be the yard stick as to how much the passengers can afford, and, if there is any deficiency, which is bound to be there, how will the deficiency be met? Sir, the Railway Minister. of course, has done well by not touching the railway fares and freights. In fact, the Railways is facing a stiff competition from the airlines and the road transport Last year, the passenger growth rate in the Railways was three per cent, while the economy had grown at a rate of 8 per cent. It is a common knowledge that when the economy grows, then there is a corresponding increase in the movement of freights and in the movement of passengers. In fact, if we look at the figures, we find that the growth rate in the passenger movement has not kept pace with the growth of the economy and it is largely due to the fact that there is a competition to the railways in terms of services and in terms of prices by the airlines and also by the roadways.

THE VICE CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA): Mr. Punj, your party has one hour and fifty-four minutes.

SHRI BALBIR K. PUNJ: Sir, I will take only 60 seconds more.

THE VICE CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA). You can speak It is just for information. There are other speakers also, I have no objection. You can take all your time.

SHRI BALBIR K. PUNJ: If the Railways do not pull up its socks—which I doubt, whether it can do under the Minister who believes more in nautanky and less in solid work—then there is no doubt that the Railways can have any hope. Sir, I thank you for giving me this opportunity and allowing me to share my thoughts

श्री मूल चन्द मीणा (राजस्थान): उपसभाध्यक्ष महोदय, इस सदन में रेलवे बजट पर चर्चा हो रही है और अभी मेरे दोस्त ऑपोजीशन पार्टी से पुंज साहब बाल रहे थे। मुझे बहुत अफसोस हो रहा है यह कहते हुए कि मेरे दृष्टिकोण से मैं उन्हें अच्छा विद्वान समझता था, लेकिन उन्होंने जो अपना भाषण प्रारंभ किया, उससे ऐसा लगता है कि उन्होंने अपनी विद्वता का परिचय नहीं दिया बल्कि अपनी विद्वता का परिचय जो इस हाऊस के मैम्बर नहीं थे, जो यहां के सदस्य नहीं थे उनके बारे मे चर्चा करके दिया, जिसके लिए बीच में चेयर को इंटरवीन करना पड़ा।

SHRI BALBIR K. PUNJ¹ Sir, he is referring to the Member of the other House. (*Interruptions*)

SHRI ANAND SHARMA (Himachal Pradesh) Sir, he is not referring to the proceedings of the other house. What is their objection? (Interruptions). He is referring to the leader. (Interruptions).

श्री मूल चन्द मीणा: जो मेरी नेता हैं, क्या उनका नाम मैं नहीं ले सकता। (व्यवधान) SHRI BALBIR K PUNJ: It is not permitted.

SHRI ANAND SHARMA: Sir, is his objection permissible under the rules? (Interruptions)

श्री एकनाथ के॰ ठाकुर (महाराष्ट्र): सर, यह गलत बयान हो रहा है।....(व्यवधान)

उपसभाष्याक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): मिस्टर ठाकुर, आपने कोई परिमशन नहीं मांगी, आप बैठ जाइए। मीणा जी, आप बोलिए।

SHRIANAND SHARMA: Sir, I am on a point of protest. .(interruptions)
I just want to draw the attention of the Chair..

उपसभाष्यक्ष (श्री संतोष आगड़ोदिया): आप लोग बैठ जाइए। नॉन इस्यू को इस्यू मत बनाइए। मीणा जी, आप बोलते रहिए। श्री मूल चन्द मीणा: उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं कह रहा था ''कांग्रेस का हाथ, गरीब के साथ'', यह एक नारा लेकर हमारी नेता सोनिया गांधी जनता के बीच में गई थीं और जनता के साथ, गरीब के साथ सोनिया जी ने कुछ वादे किये थे। इस बजट ने उन वादों को पूरा किया है क्योंकि यह एक विश्वास की बात है। चुनाव के अंदर हमारे सामने बैठे हुए लोग और उनके नेता भी वादा करते हैं, इन्होंने जनता से पांच साल पहले जो वादे किए थे वे पूरे नहीं किए इसलिए जनता ने इनको वापिस इधर से उधर भेज दिया सोनिया गांधी की बात पर विश्वास किया। लालू प्रसाद यादव जी ने अपना भाषण देते वक्त एक महान महिला के लिए महान कह दिया।

श्री बलबीर के॰ पुंज: यह देखिए।

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): एक मिनट, एक मिनट, मैं बोल रहा हूं, आप क्यों घबरा रहे हैं। मीणा जी, आप इसको ऐवाएड करिए, आप क्यों कंट्रोवसीं में जा रहे हैं। थोड़ा सा ऐवाएड करिए न, आप नेता बोलिए, कुछ ऐसी बात ..(व्यवधान).. आपको मैं हेल्प कर रहा हूं फिर भी आप हमको हेल्प नहीं कर रहे हैं। आप चुप रहिए। मीणा जी, आप इसको ऐवाएड करिए, आप अपने नेता को क्यों कंट्रोवसीं में डाल रहे हैं।

श्री मूल चन्द मीणा: उपसभाध्यक्ष महोदय, इसमें कंट्रोवसी कुछ नहीं है। जो महान हैं, उसको महान नहीं कह सकते? ..(व्यवधान)..

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): क्या नहीं कह सकते, आप भी समझते हैं। आप समझते हैं, आप ऐवाएड करिए। आप प्लीज़ एवाइड करिए।

श्री मूल चन्द मीणा: उपसभाध्य क्ष महोदय, सन् 2004-2005 का बजट पेश किया गया, जिसकी वार्षिक योजना 11,265 करोड़, सुरक्षा से संबंधित 2,933 करोड़ है। टोटल जोड़ा जाए तो वार्षिक योजना 14,198 करोड़ की है।

एक माननीय सदस्य: रुपया कहां से आएगा?

श्री मूल चन्द मीणा: अभी मैं बताता हूं कि कहां से आएगा, कहां जाएगा।

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): मोणा जी, आपको जवाब देना जरूरी नहीं है, आप अपनी बात बोलते रहिए।

श्री मूल चन्द मीणा: उपसभाध्यक्ष महोदय, रेलों ने इस देश की एकता को बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया और राष्ट्रीय एकता बनाने में ..(व्यवधान)..

SHRI N. JOTHI (Tamil Nadu). Excepting Tamil Nadu... (Interruptions) Nothing for Tamil Nadu...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA): Your turn will come and then you say what has been given and what has not been given.

If everybody starts speaking like this, ...(Interruptions) No; you are not given the permission ...(Interruptions) You can talk about injustice when your turn comes up. ...(Interruptions) When your turn comes up, you will speak ...(Interruptions) It does not mean that you will interrupt like this.
- Please, don't interrupt. मीणा जी, आप बोलिए। नो इंटरप्शन प्लीज़। बोलिए

श्री मूल चन्द मीणा: उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं यह कह रहा था कि रेलों ने इस देश की एकता को बनाने में महत्वपूर्ण रोल अदा किया। रेलवे इस देश के लोगों के लिए यातायात का सबसे बड़ा साधन है। इस देश के 1,45,00,000 लोग रोज रेल से यात्रा करते हैं। पिछले कुछ दिनों में हवाई जहाजों की दुर्घटनाएं हुईं, रेलों की दुर्घटनाएं हो रहीं थीं। हवाई जहाजों की कई दुर्घटनाएं हुईं तो लोग डरने लगे जहाजों से या रेलों से यात्रा करने में ..(व्यवधान)..

उपसभाष्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): आप लोग इंटरप्ट मत कीजिएं बोलने दीजिए न, अब कोई कंट्रोवर्शियल बात तो वे बोल नहीं रहे हैं।

3-00 PM

श्री मूल चन्द मीणा: दुर्घटनाएं स्टार्ट हुईं, इन दुर्घटनाओं को रोकने के लिए पिछले तीन-चार साल से कार्यक्रम रेलवे विभाग का चला। जहां तक रेल दुर्घटनाओं का सवाल है, वर्ष 2000-01 में 473 रेल दुर्घटनाएं हुई थीं। उसके बाद रेल विभाग ने कुछ सुधार किए और वर्ष 2003-04 में 325 रेल दुर्घटनांए हुईं। इस तरह इनमें कुछ सुधार हुआ।

SHRI BALBIR K. PUNJ[.] Compliment the NDA Government for that. एन.डी. ए. गवर्नमेंट में हुआ यह। Why are you not saying that?

श्री मूल चन्द मीणा: मैं कब कह रहा हूं कि NDA गवर्नमेंट में नहीं हुआ मैं सुधार की बात कह रहा हूं, आप नहीं सुनना चाहते तो क्या करें .. (व्यवधान)..

एक माननीय सदस्य: पिछले एक महीने के बारे में और बता दीजिएगा कि कितनी दुर्घटनाएं हुई।

श्री मूल चन्द मीणा: उपसभाध्यक्ष महोदय, इसके लिए रेल मंत्री जी ने अपने बजट भाषण में इस ओर विशेष ध्यान दिया है कि ये दुर्घटनाएं कैसे रोकी जाएं रेलवे के सामने एक ही सबसे बडी चुनौती है कि यात्रियों को किस तरह अपने गंतव्य स्थान तक सुरक्षित पहुंचाया जाए। इस रेल बजट के अंदर रेल मंत्री जी ने इसको बहुत प्राथमिकता दी है और पिछले बजट की तुलना में इसके लिए अधिक बजट रखा है। दुर्घटनाओं को होने से रोकना, रेल पर्थों को सुधारना, पुराने पुलों का नवीनीकरण, उनका पुनरुद्धार करना, सिंगल गितरोध को दूर करना, नवीनीकरण करना, बिनाफाटक के क्राॅसिंग्ज़ पर चौकीदार लगाना-इस रेल बजट में इन चीजों को प्राथमिकता से लिया गया है। नयी

RAJYA SABHA

टेक्नोलॉजी का प्रयोग करके लोगों को सुरक्षित रेल यात्रा की सुविधा देने के लिए इस रेल बजट में व्यवधा की गई है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, इस देश में रेलों में आग लगाने की कई घटनाएं सामने आई हैं। इसके लिए रेल मंत्री जी ने यह अच्छा काम किया है कि उन्होंने ज्वलनशील और विस्फोटक पदार्थों को रेलों में ले जाने पर प्रतिबंध लगा दिया है। इससे निश्चित रूप से यात्रियों की सुरक्षा में सुधार होगा और यात्री सुरक्षित महसूस करेंगे। हो सकता है कि इन घटनाओं में कुछ मनचले लोगों और कुछ ऐसे संगड़नों का हाथ हो जिनका काम आदतन लोगों में टैरर पैदा करना है। यदि ऐसे लोगों से मुकाबला करना है तो हम सबको मिलकर रेल मंत्री जी को सहयोग देना चाहिए जिससे रेलों में सुरक्षा बढ़ सके।

उपसभाध्यक्ष महोदय, रेलवे में सुरक्षा से संबंधित कई कदम उठाने की बात रेल मंत्री जी ने कही है। हमारे यहां रेलवे सुरक्षा बल लेकिन जितने आवश्यकता है, उतना नहीं है। इसके लिए रेल मंत्री जी ने रेलवे सुरक्षा बल के अंदर 8,000 लोगों की नियुक्ति की बात कही है। उस नियुक्ति में शैडयूल्ड कास्टस, शैडयूल्ड ट्राईब्ज़, अल्पसंख्यक, ओ॰बी॰सी॰, विकलांग, आतंकवादियों के द्वारा मारे गए लोगों की विधवाओं को आरक्षण देने की बात कही गई है।

मैं रेल मंत्री जी को इस बात के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहूंगा कि यदि गरीब के हित की बात कहने वाला, सोचने वाला इस देश का कोई संगठन है तो कांग्रेस पार्टी ही एक ऐसा संगठन है जो गरीब के हित की बात सोचता है और उसी के आधार पर रेल मंत्री जी ने यह बजट बनाया है। रेल मंत्री जी से मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि आप रेलवे सूचना प्रणाली में सुधार की बात कर रहे हैं और करनी भी चाहिए, क्योंकि रेलों के आने-जाने में विलम्ब होता रहता है तथा इसकी प्रोपर्ली सूचना यात्रियों को नहीं मिल पाती है जिससे यात्रियों को बहुत असुविधा होती है। यदि हम नई दिल्ली और पुरानी दिल्ली स्टेशनों की बात करें सो वहां टेलीफोन पर सूचना देने वाले को हो पता नहीं रहता कि अमुक ट्रेन कब आएगी और कब जाएगी। इसलिए इस ओर विशेष ध्यान दिया जाए तथा प्रोपर्ली लोगों को सूचना मिले ताकि यात्रियों को प्लेट फार्म पर ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़े और सही टाइम पर प्लेट फार्म पर जाकर रेल यात्रा कर सकें।

सुरक्षा के इंतजाम के लिए रेल मंत्री जी ने सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए और उसकी सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाया है। बंगलीर में 10 करोंड़ रुपए की लागत से अंतर्राष्ट्रीय मापदंड के अनुरूप बचाव एवं चिकित्सा राज्य संस्थान स्थापित किया जाएगा। रेलवे प्लेट फार्म और रेलवे स्टेशनों पर सुरक्षा की दृष्टि से रेलवे मंत्री जी ने जी॰आरूपी॰ और आरूपी॰एफ॰ को कुछ नई जिम्मेदारियां दी हैं। कुछ स्टेट्स की राज्य पुलिस, जो अधीनस्थ पुलिस है, उसको भी जिम्मेदारियां दी हैं। यात्रियों को जो असुरक्षा प्लेट फार्म पर महसूस होती है और जब इन विभागों के पास नई जिम्मेदारियां आएंगी तो निश्चित सुविधाएं मिलेंगी, सुरक्षा मिलेगी और लोग अपने को

सुरिक्षत महसूस करेंगे। रेलवे यात्रा सुविधाओं के लिए 215 करोड़ रुपए की एक स्पेशल व्यवस्था है, जिसके अंदर खान-पान की व्यवस्था में सुधार, सफाई की व्यवस्था इत्यादि हैं। रेलवे के अंदर यात्रियों को टिकट का रिफंड लेने में यदि वह यात्रा नहीं कर पाता है, 12 घंटे बाद वह रिफंड प्राप्त कर सकता है। इससे यात्रियों को और सुविधा मिल सकेगी। इसके अलावा इस रेल बजट में महिलाओं का विशेष ध्यान रखा गया है। महिला यात्रियों की चैकिंग महिला जांच टिकट दल द्वारा किया जाएगा। यदि कोई पुरुष महिला की जांच करता है तो उसको शर्म महसूस होती थी तथा असुरक्षा महसूस होती थी। अब जब महिला दल करेगा तो इससे महिलाओं के प्रति विश्वास बढ़ा है। महिलाओं के साथ-साथ शिक्षित बेरोजगारों की एक बड़ी समस्या है। शिक्षित बेरोजगार यदि रोजगार के लिए कहीं साक्षात्कार देने जा रहा है, परीक्षा देना जा रहा है तो वह टिकट पर पूरी रियायत ले सकता है। इस देश में कई ऐसे भी शिक्षित बेरोजगार रह जाते हैं तो कराये के लिए पैसा न होने के कारण साक्षात्कार देने से वंचित रह जाते हैं। उनको सुविधा देने के लिए यह कदम उठाया गया है। माननीय रेल मंत्री जी ने उनके दुख-दर्द को समझा है। इसीलिए उन्होंने शिक्षित बेरोजगारों को परीक्षा देने के लिए जाते समय निशुल्क रेल यात्रा की सुविधा दी है।..(व्यवधान)..

श्री लिलतभाई मेहता (गुजरात): माननीय उपसभाध्यक्ष जी, मुझे एक फैक्ट की बात करनी है। रेल मंत्री जी ने कल यह कहा कि भारत सरकार या राज्य सरकारों के कई रोजगार के अवसर होंगे, उसके लिए अगर कोई देश का नागरिक जाता है तो उसको निशुल्क सुविधा दी जायेगी। इन्होंने जो तथ्य मरीड़ कर रखा है। यह ठीक नहीं है।

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): आप सुनिये। यह क्या मरोड़ते हैं, क्या नहीं मरोड़ते हैं, इनको मरोड़ने दीजिए। जब आपका नम्बर आये तो आप उसको ठीक कर दीजिएगा। अभी बीच में हर शब्द को हम लोग ठीक नहीं कर सकते हैं। आप बोलिये।

श्री मूल चन्द मीणा: उपसभाध्यक्ष महोदय, मूक और बिधर व्यक्तियों के लिए, गूंगे-बहरे व्यक्तियों के लिए इसमें रियायत दी गई है। हीमोफीलिया रोगी के साथ जो व्यक्ति जाता है उसको भी टिकट में कुछ रियायत दी गई है। इसमें मानवता और मानवीय आधार को देखा गया है। इसलिए इस बजट का हमें सहर्ष सपोर्ट करनी चाहिए, इसकी बढ़ाई करनी चाहिए। इस देश के गरीब लोगों के अनुसार, गरीब लोगों को भावनाओं के अनुसार यह रेलवे बजट है। इसके लिए लालू जी की प्रशंसा हम सब करें। उनकी प्रशंसा करके हम कोई बुरी बात नहीं करने जा रहे हैं।

लेकिन समझ में नहीं आता है कि जब गरीब की बात की जाती है, गरीब के बारे में चर्चा की जाती है, शैड्यूल्ड कास्ट और शैडयूल्ड ट्राइब्स की बात की जाती है तो इसमें किस बात का एतराज है?

एक माननीय सदस्य: हमें कोई एतराज नहीं है।

RAJYA SABHA

श्री मूल चन्द मीणा: यह बहुत अच्छी बात है कि एतराज नहीं हैं जहां तक नई रेल लाइनें बिछाने की बात है, सन् 2004-2005 के लिए 1650 किलोमीटर नई रेल लाइन बिछाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। आमान परिवर्तन 1000 किलोमीटर का लक्ष्य रखा गया है। रेलवे का नया कारखाना कहीं भी लगे. रेलवे के पहिये बनाने का कारखाना कहीं भी लगे. लेकिन इस बजट के अंदर यह व्यवस्था की है, इससे लोगों को रोजगार मिलेगा, रेलों के जो कलपूर्जे हैं, वे इस देश के अंदर बनेंगे, अच्छे बनेंगे, नई टैक्नालाजी आयेगी। रेलवे के अंदर हमेशा नई रेल गाड़ियां चलार् जाती हैं इस बार भी 18 नई रेल गाड़ियां चलाने की बात रेल मंत्री जी ने कही है। रेलवे स्टेशनों के प्लेटफार्म पर जो काम करने वाले हैं, जिन्हें कुली कहा जाता है, जो गरीब तबके के हैं, मध्यप तबके के हैं, उन कुलियों की सुविधा देने की बात रेल मंत्री जी ने कही है। कुलियों को परिवार सहित, अपनी पत्नी के साथ यात्रा करने की सहूलियत दी है, वह दूसरे स्टेशन तक यात्रा कर सकता है, उसे पास देने की बात कही है। कुली लाइसेंस तो ले लेते हैं लेकिर उनके लिए उहरने और बैठने के लिए कोई स्थान नहीं होता है, ऐसी स्थिति कई स्टेशनों पर है। उनके लिए रेल मंत्री जी ने आश्रय स्थल बनाने के लिए पांच करोड़ रुपये की व्यवस्था की है। रेल मंत्री जी ने अपने भाषण में शैडयल्ड कास्ट्स और शैंडयुल्ड युइब्ब के आरक्षण की व्यवस्था की है। उसके बेकलॉग को पूरा करने के लिए स्पैशल कैटेगरी में स्पैशल भर्ती की जाए, इस बात की घोषणा उन्होंने अपने बजट में की है। इससे ऐसा लगता है कि पिछड़े और गरीब, दलित और शोषित समाज के प्रति इस सरकार का दृष्टिकोण क्या है। इससे लोगों में जागृति पैदा होगी कि यह सरकार दलितों, पिछड़ों, गरीबों और महिलाओं के प्रति सद्भावना रखती है, उनको सुविधाएं प्रदान करना चाहती है, उनके अधिकार सरकार के हाथों में सुरक्षित है और यह सरकार चाहती है कि इस बजट के माध्यम से इन गरीबों को सुविधाएं पहुच सकें, इन वर्गों को सुविधाएं मिल सकें। मैं रेल मंत्री जी को इस बात के लिए भी धन्यवाद देना चाहता हूं कि आपने शैंडयूल्ड कास्ट्स, शैंडयूल्ड ट्राइब्ज और ओबीसी के लिए विशेष विज्ञप्ति निकालकर भर्ती करने की बात की है। इससे इन वर्गों में लम्बे समय से जो बैकलॉग चला आ रहा है, उसको पूरा करने की उम्मीद जगेगी। रेल मंत्री जी ने रेलवे मिनिस्टर बनने के तुरंत बाद दो-तीन बातों की घोषणा की थी। आदरणीय पुंज जी भी खादी की बात कह रहे थे। उन्होंने कहा कि रेलवे प्लेटफॉर्म पर, रेलों के अंदर, रेलवे स्टेशनों पर प्लास्टिक के गिलास और प्लेटे नहीं होती चाहिएं। इसके लिए उन्होंने कुल्हड़ की, मट्टे की बात की है। इस देश के लाखों-करोड़ो गरीबों का लाखों करोड़ों बेरोजगारों को रोजगार देने की भावना से यह कदम उठाया गया है। इन बातों से दो तरह के फायदे होंगे। प्लास्टिक से पास्ल्यूशन होता है और ऐसा करने पर उससे बचा जा सकेगा। इसके अतिरिक्त कुल्हड़ में पीने का मजा अलग ही होता है चाहे आप चाय पीओ या मट्टा पीओ या पानी पीओ।

श्री रुद्र नारायण पाणि (उड़ीसा): पेपर बैग्स भी तो यूज़ किए जा सकते हैं, जहां तक पर्यावरण का सवाल है।

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): जब आपका नम्बर आए, तब आप सजैशन दे दीजिए। मंत्री जी उस पर विचार करेंगे।

श्री मूल चन्द मीणा: इसके अतिरिक्त खादी के पर्दे, खादी की बैड शीट की बात, जो कही गयी है, उससे भी गरीबों को रोजगार प्रदान होगा। खादी कौन बनाता है? गरीब काम करता है और खादी का उत्पादन करता है। कुल मिलाकर इस बजट की यदि विशेषताओं के बारे में कहा जाए तो इसे गरीब सपोर्ट बजट माना जाना चाहिए। आज हम रेलवे की, विकास के संबंध में, सुविधाओं के संबंध में दूसरे देशों से तुलना करना चाहते हैं। दूसरे देशों की तुलना में हमारी जो जनसंख्या है, इसके ऊपर हमें विशेष ध्यान देना चाहिए कि जनसंख्या पर नियंत्रण हो। जो हमारे पास रेलवे में साधन हैं, जितना धन है उन्हीं संसधानों से इतनी बड़ी जनसंख्या को सुविधाएं देने में कठिनाई पैदा न हो, इसके लिए एक-दूसरे पर छींटा-कशो करने के बजाए पॉजिटिव काम के लिए लड़ना चाहिए और जो सही है, उसके लिए सही कहना चाहिए। इसलिए महोदय, मैं अपनी बात एक अफसोस के साथ खत्म कर रहा हूं कि मुझे विपक्ष के ऊपर अफसोस है। कल गरीबों के सपोर्ट में जो बजट पेश हुआ था, उसका इन्होंने बहिष्कार किया। इन्होंने गरीब के हित की बात को नहीं सोचा और न सुनना चाहा, इस बात का ज़रूर अफसोस है। महोदय, साथ ही मैं इस रेल बजट का सपोर्ट भी करता हूं और रेल मंत्री जी को और सरकार के प्रधान मंत्री जी को इस बात के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं कि इन्होंने जो बजट बनाया (व्यवधान)......

श्री एकनाथ के॰ ठाकुर: और सोनिया जी को.......

श्री मूल चन्द मीणा: अब मैं क्या कहूं इनको?

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): जब आप प्रोवोक कर रहे हैं जबरदस्ती फिर वे बोलेंगे तो आप कहेंगे कि वे क्यों बोलते हैं? अब आप क्यों प्रोवोक कर रहे हैं?

श्री एकनाथ के॰ ठाक्र: माफ कर दीजिए।

उपसभाष्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): अच्छा, आपने माफी मांग ली। मीणा जी छोड़िए, उन्होंने माफी मांग ली है आप बोलिए। उन्होंने माफी मांग ली है, बात खत्म हो गई।

श्री मूल चन्द मीणा: इसलिए मैं देश के प्रधान मंत्री जी को बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने यह बजट, हमारे नेता की आवाज़ को, जनता के बीच में जो चुनाव में कही गई -थी, उसको पूरा करने के लिए यह कदम उठाया है, इसी के साथ धन्यवाद।

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: Sir, while welcoming the Railway Budget, I also welcome a latest survey according to which 83 per cent of the population has given a very positive response to this Budget. Now, 83 per cent people means, -- "populist". I was asking one of my esteemed

colleague, who has command over language, as to what exactly the dictionary meaning of "populist" because the way it is being used in the YTV channels by some of our opposition parties—not all—as if populist is not a very complimentary term

SHRI N JOTHI Come and survey in Tamil Nadu, you will know the results

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE Please don't interrupt me. If you start interrupting me, you know that I have ten years of experience 1 know how to interrupt and how to stop. So, if you want to engage in that, I don't mind Offer is open to you So, I was saying whether the term "populist" is a complimentary term? Should the Budget of an elected Government of this Republic be an elitist one? Some one who knows more about it was tellina that 'populism' something call me ıs we 'pro-people' or 'people-friendly' So, I don't think whether it is a compliment which has been made by the Opposition when they say that it is 'populist' Going beyond that, if you really look at today's Budget, you will exactly know what this document means. Some very disparaging comments were made, not against the hon. Minister, I know there is manial of Laluii. This point is irrelevant here. He can protect himself. भंडारी जी को मैं बता सकता हं He can protect himself. He has been protecting himself for years together and he would protect himself at some others' cost for years to come. That is not the point. My point is that someone said from here that we should tell the people that it is not safe and secure to travel in train and some insurance should be taken before travelling in a train. That is not the way. Parliament cannot send such a message to the people of this country. The Ministers change. There have been many Ministers. But the Railways, as an institution, will remain as it is for hundreds of years to come. So, let there not be any play between us. Let us not do this mischief at the cost of the people who spend day and night in serving the Railways and serving the country, irrespective of who is governing and what kind of mania is having for whom, for whom you have liking, for whom we have disliking etc Notwithstanding this, I would say that this type of message should not go from Parliament. The people of this country expect from Parliament, from the Railway Budget, that they will be able to travel safely, with security as well as without spending more from their pockets. Some people may like it. Some people may dislike it because we have a huge population where opinions differ. The poor people do not want that there should be more burden on their pockets if someone says, 'No The conception of the Budget means there must be some hike in the fares.' They should have that much courage to say openly because those who are sitting in the ivory towers of those who are talking about economics and all that in the TV channels can afford to say that. But those who go before the people for votes should not say like this. They have just now faced it.

If they have the courage, then, they should say 'yes'. I think Mr. Shourie is not here. Had he been here, I would have engaged him in that. Yes, you can go and say that this is what you call reform. Reform means you have to increase the burden on the common people. Well, that is not the presumption everyone shares. Let it be explained what it means. What exactly do they mean by 'populist' measures, and what anti-populist measures are required in the Budget? Sir, what is this Budget? Today it is the month of July, and by the time it is finalised, it will be August or September, Hardly six months or six-and-a-half months are left. An interim Budget was placed by the NDA Government in the month of February. It is a continuation of six months and further six months. Assessment is made when the Budget is presented. On the earlier performance, you assess someone, not on assumptions or presumption. And I have a feeling मैं हिन्दी में भी बोलंगा। शायद कुछ ऐसे भी आइंडियाज भी हैं, जो हिन्दी में ही बोल सकते हैं . because the perception is like that and the way some people say things about Shri Lalu Yadavji, I have seen this in TV channels. I have never said these personal things. But apart from everything political, somehow, the feeling is that, 'hey, this fellow यह अंग्रेजी ठीक तरह से नहीं बोल पाता। यह सब बात करेगा these type of things पोर्टर्ज बजट में पोर्टर्ज का क्या काम है? हमारे आंगन में तुम्हारा क्या काम है? यहां एलिटिस्ट की बात करो, रिफोर्म्स की बात करो, पोर्टर कहा गया? अनआर्गेनाइण्ड लेबर, ये सब बातें हैं। ये सब शब्द 'कल्हड़' बजट में होंगे A On Kulhars there is a sort of research going on. Sir, everyone knows that in the Rajdhani Express, whenever you travel, Dahi is always served in Kulhars. Nobody ever talked about it. But today, when Shri Lalu Yadavji says this, he had the guts to say that this plastic should be replaced with Kulhars. Chota Shourie started a research on it. I saw it in some newspaper the day-before-yesterday. कुल्हड में क्या-क्या हो सकता है? What is the chemical reaction? Why has this happened? If some Westerner comes with an idea that this is an antipollution measure, and it is the biggest environment-friendly measure, some of us will accept it. हां. वे बोल रहे हैं।You must now discard plastic. But

if Lalu Yadavii savs 'Kulhar' then that becomes a laughing matter. But, this is not a laughing matter. People who go for votes in Bihar, they know that for the last 10-15 years. You can laugh away, You can say whatever you have to say But when you go to the people, you will find that Kulhar is being used. What is the problem? Let us have a discussion on that. This is the idea. What does this Budget mean? What do we find in this Budget? We cannot do assessment because assessment, if it is done, and if it is done by someone for six months or six-and-a-half months, it will be again on the performance of the earlier Ministry. That is what it means. What is this new Budget? It will show the direction. So far as the new Government is concerned, it shows the direction, Sir. The point of assessment has not come. I am sorry to say that some how or the other, the Opposition in its attempt to hop-stop and jump for assessment of the governance of the new Government, is going too far in assessing something, which is there for the last one month. When they are talking about the Railways' performance, ves, on some points we should thank the NDA Government. It is not a question of thanking the NDA Government or this Government. The problems of the Railways have been known. Now, this is a Budget for six months. For six months, the interim Budget was there. This is for the next six months. What direction does this Government give? We are not only welcoming it but we are heartily saying that the direction is that the poor has come on the agenda of the nation. This becomes clear from this Budget. How is it to be done? What is to be done? What performance will it show and what assessment will it be? It will be done after one year. Even after six months, the assessment can be done. As far as this Budget is concerned, it can be said that it is not a one-day match, it is a half-day match. If this Government goes for a five day match, it will be a match for five years. This is a five years' assessment. But, this is only a half-day match This is not an assessment ...(Interruptions)...

SHRI N JOTHI: It may be disrupted due to rain also ...(Interruptions)...

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: You please sit down. ...(Interruptions)... I am not yielding ...(Interruptions)... Sir, please see that these interruptions do not happen. ...(Interruptions)... When I am not yielding, you cannot just stand up and say these things. ...(Interruptions)...

SHRI N JOTHI. I am only saying that ...(Interruptions)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA): I think you are interrupting too much. I request you not to interrupt ...(Interruptions)... Your leader will get a chance. You convey the message to him ...(Interruptions)... Please don't interrupt ...(Interruptions)...

SHRI N. JOTHI: It can be disrupted due to rain also ...(Interruptions)...
SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: I am not yielding ...(Interruptions)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHR! SANTOSH BAGRODIA): When your turn comes up, you talk....(Interruptions)... It does not mean you can interrupt....(Interruptions)... Please don't interrupt(Interruptions)... You tell the facts when your turn comes up, not otherwise. . (Interruptions)...

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: So, that way, if we see at this Budget, I feel that direction which was to be given to this Government through the Common Minimum Programme, that is being given by certain actions, like the social security scheme for the porters, *kulhars, khadi,* etc. So, these are the directions through which within the country our home industries are grown through co-operatives. These directions are very well-meant directions which should be welcomed by all. Sir, first and the foremost point is that there is no hike either in fares or in freights. It should be welcomed by all. This would have saved this country from any inflationary trends in the future to come.

Sir, another point is about recycling of scraps. This is an idea which has been mooted. This is a very good idea. This can be another source of mobilisation of funds for the Railways. Similarly, you take e-mail tendering. One of the major points where cost-cutting can be done in the Railways is in purchase and procurement. So far as the Railway system is concerned, one of the areas of weakness is purchase and procurement. The hon. Minister wants to introduce the e-mail tendering as a pilot project. If there is really a breakthrough in this, I am sure, this can be one mode where the internal cost-cutting measure can be very effective.

Sir, safety and punctuality are the major concerns, so far as the Railway is concerned. As far as the safety of the people travelling in the Railway and the incidents of dacoities in one particular State during this one month are concerned, they are causing a lot of anxiety. This was a problem. You will remember, Sir, two months back when a relative of our

ex-Prime Minister was thrown out of a train, this House had shown a lot of concern on that Definitely, that requires a lot of attention, and there also this recruitment of RPF is in right direction. The steps like recruitment of RPF, strengthening of GRP are in right direction. But I have a point 1 would like the hon. Minister to have a detailed inquiry as to how a lot of decoities are taking place in one particular place. In my State also, there was one train dacoity. But how is it that in one particular State, in one particular month, a lot of dacoities had taken place? The Railway Minister is loved by a lot and hated by a few. How is it that in one particular State, 12-15 dacoities are taking place in a month? Dacoities are taking place regularly. I would like to know whether there is something else behind it You will not understand Hindi. You put it there, ''परदे के पीछे कुछ और है क्या?'' So, is there some other effort to malign the Minister who has to be maligned by some people for some reasons or the other? I want a detailed enquiry into it. I want an enquiry in totality, not an enquiry into an individual incident of dacoity like this (Interruptions)

श्री प्यारेलाल खंडेलवाल (मध्य प्रदेश): दीपांकर जी (व्यवधान)..

श्री दीपांकर मुखर्जी: नहीं, नहीं, आपको यील्ड कर रहा हूं, बहुत सीनियर नेता है। मैं देखकर हो बोलता हूं। So, as far as the major point regarding the safety of the Railways is concerned, I would like to say that a Fund with a corpus of Rs 17,000 crores was created. I will not repeat it. The Railway Minister can repeat. Out of that Fund, an amount of Rs. 3000 and odd crores has been kept for the safety. So far as the Operative Ratio is concerned, I would say that the House would like to recollect that Operative Ratio of the Railways, which is one of the major parameters to look at the operative performance of the Railways, it reached an alarming level of 98.6. Now, this has come down to 92 6. Now, let Mr. Punj or his friends assess whether bringing down the Ratio from 98 to 92 is a credit or discredit. Now, whether it is 98 or 92, I would not like to question that. But the objective has to be that we have to improve that Operating Ratio so that it comes down further there was a time when it was 82 per cent, I think it was in mid 80s or something because then only that Reserve Fund which is created for internal generation of fund to make your own, what you call investment from the Railways for the maintenance of the Railways, so far as the Depreciation Reserve Fund is concerned, I find now that this has if I am wrong, the Railway Minister can correct me reached Rs 2500 crores. Earlier, it was Rs. 2200 crores and all that This is an improvement in this direction so far as the reserve is concerned. A sum of Rs. 2500 crores is there. But so far as the Plan investment is concerned, about Rs. 3000-3500 crores is being planned to tap from the markets. There, probably, foreign institutional investors are also being talked about So far as I understand, this is something nothing new for resource mobilisation because last year also Rs. 2300 and odd crores was mobilised from the market including 75 million dollars from outside if my figures and yours and the same. But so far as the resource part is concerned, I am finding this is a continuity, but somehow or the other, I was being little confused when the Opposition said, when Mr. Punj said that this is something as if no fund has been assured for the on-going safety schemes I do not find that. If it is there, that should be clarified. But there is one point, which was in the earlier Budget also, and which is a point of very much anxiety to the Railways. It is regarding the ongoing schemes. It is a fact. For years together, schemes are going on with allocation of Rs. 2 lakhs, Rs. 5 lakhs, this and that. Ultimately, it comes down. It goes on, Ministers may come and Ministers may go. But these projects go on forever. Today it is a fact that Rs. 40,000 crores worth schemes are pending. Now, in these Rs. 40,000 crores worth schemes, there is cost-escalation there is timeescalation. Both are going together, and the earlier Minister had talked about remote area development scheme for Rs. 20,000 crores. Now, I must remind my friends on the other side that at that time also this fund was mooted without a funding, without a sort of confirmed funding, assured funding This fund of Rs. 20,000 crores was mooted. This was for those schemes. Now what efforts the Government is going to make to have this Rs. 20,000 crores mobilised so that these schemes can be completed within five years? This is one area, I think where more clarification is necessary I think, there, the hon, Railway Minister is talking about the help, assistance from the Prime Minister and other sources to get this fund. This fund of Rs. 20,000 crores was mooted earlier also and this funding is still blank as it was last time ...(Interruptions)...

SHRI LALITBHAI MEHTA: He has not mentioned it in the Budget at all.

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: No, but when he was talking about it, when he was mentioning it he was basically talking about the help from the Prime Minister. I could see what he wants from him because on

other fronts, i.e., non-plan and plan, he does not require any assistance from the Government. Where he requires assistance is in this area, i.e., for remote area development fund which was mooted earlier because that is the only way to remove one of the biggest liabilities of the Railways. I have two points of caution so far as the Railways is concerned. I wish he was there. मैं हिन्दी में ही बोल लेता। Now, one point is, I am very happy to note that efforts are being made to revive Jamalpur unit for production. But I would like to invite his attention to one thing that some of the public sector wagon units, right in Eastern zone including Bengal and Bihar are under-utilised. They are: Bharat Wagon and Engineering Company, Braithewait and Burn Standards They constitute about 50 per cent wagonmanufacturing capacity of the whole country. Now, they are being underutilised because of lack of orders and because of some other problems which I will mention in the form of a note to the Ministry. It must be seen that these capacities are fully utilised. Then only the idea of reviving Jamalpur unit will really have its results. Because, otherwise, tomorrow Jamalpur unit also will have the same problems as these three units have. So, more wagons are required. We have ordered 18500 units this time. More wagons can be forthcoming provided certain actions are taken on these four unitsk and other wagon-manufacturing units. So, new units should be supplemented to the full capacity utilisations of other units. Same thing goes for Chapra also. When the feasibility study is made, we have to see that the capacity of the Durgapur and Bangalore units is not under-utilised, if the other units come up. With the totality as it, I can only see one point. मुझे हिंदी में यही कहना है कि यह एक बजट है जिसको यदि हिंदी में पढ़ा जाता है तो ज़मीन की खुशब् आती है। मगर ये ज़मीन की खुशब् शहरों में बहुत लोगों को बदब लगती है। अब जिन को ये बदब लगती है, उनका परिणाम क्या होगा, यह दो-तीन महीने पहले पता लग चुका है। आप इसे populist कहिए या बोलिए कि स्टंटबाजी है या कुछ भी है, लेकिन people को छोड़कर कोई नीति नहीं हो सकती। अब पूछा जा रहा है Village on wheels के बारे में किसी ने नहीं पूछा कि 'Palace on Wheels' क्या है? जब कंसेशन देते हैं किसी को, इंडस्टिलिस्ट को, तो उसको कंसेशन बोलते हैं और गरीब को अगर देते हैं तो सबसिर्छ। बोलते हैं। वहां सबसिडी नहीं है बल्कि उसके लिए कंसेशन शब्द है और यहां सबसिडी शब्द है। यह एक दिशा का परिवर्तन मुझे इस बजट में लग रहा है और यह दिशा-परिवर्तन हिन्दुस्तान की राजनीति में बहुत जरूरी है। सुधार का नाम हो, लेकिन जिस सुधार से जनता का संपर्क नहीं है, पब्लिक का सुधार नहीं है, उस सुधार से तो बिल्कुल फायदा नहीं होने वाला है, because they will have no connection, they will have no tracks.

The time has come when we must learn, if we have not learnt so far—if you want to hide you can hide it—that Shri Lalu Prasad has given such a direction in the budget which forces BJP today to denounce Shri Lalu Prasad but not his budget. Thank You very much.

DR. T. SUBBARAMI REDDY (Andhra Pradesh): Sir, at the outset, I must congratulate our Railway Minister, Shri Lalu Prasad, for having come up with a surprise Railway Budget. If you go back to the history of Railway Budgets presented by Railway Ministers for years, you would find that there has always been an increase in the fares as well as freight rates. For the first time in the history of India, we see that the Railway Minister, Shri Lalu Prasad had the courage, capacity and magic to introduce the budget without increasing any fares and giving psychological satisfaction to the people of India that a budget could be presented without increasing the fares and freight charges. I congratulate him for that. Most importantly, he has taken into account the common minimum programme of the present Government. That programme should be implemented. He has researched a lot and has applied his mind. He has taken lot of pains and has taken into account the extracts of Railway Budgets.

The new priority of development is modernisation of the common minimum programme, modernisation of Railways, replacement and renewal of assets, particularly, track renewal, the safety of passengers, cleanliness, improvement in passenger amenities, control of expenditure—these are the main things. Actually, I don't find much to fight between the Opposition and the Ruling Party. What the people want is perfection and the best results.

This is the Upper House, the Rajya Sabha. Everybody in the country is watching us on the television. बार बार कोई इतना बोले तो ठीक नहीं होता है। We must listen to what everybody says and wants for the Common man. दुख होता है when you go to railway stations and see the trains ..येटली गंदा है। Even after so many years, when we find human waste strewed on the tracks, we feel disgusted. We yearn for beautification and a clean atmosphere. It is very bad even from the health point of view. While travelling in the trains we find much discomfort in using the toilets. Now, I am happy that Shri Lalu Prasad has come up with some good ideas. He dreams of giving the best amenities to passengers and wants that utmost cleanliness is maintained. We welcome it. We must encourage it, irrespective of our party affiliations, when he comes forward with a budget like this, because today train journey

[7 July, 2004]

is the common man's journey. People who can afford to travel by flights, find that the flights have good amenities and very clean toilets. Shri Latu Prasad wants the train toilets to be as clean as the aeroplane toilets. We welcome it. We must be really happy

The first priority should be to see that the common man, in his travel. is not made to spend more money. Secondly, the common man wants happy atmosphere and deserves security and safety. So, he wants to take pain for security and safety Every Minister in the previous Government used to take pain, I do agree, but, nobody concentrated so much. Here, he has come forward. He wants to spend thousands of crores of rupees for safety, he wants to spend thousands of crores for cleanliness, he wants renewal of tracks and modernisation. All these are welcome measures So, i am very happy that he has made a job quota for weaker sections. For the first time, he has reserved 25 per cent of the bookstalls in the railway stations for minorities, weaker sections and for the handicapped. It is a very good measure. We welcome it. He said that unemployed youths, who want to go for interview, will be given free tickets. It is also a welcome measure. It is very surprising that he has got all these good ideas. It is very simple. We people think of him—हमने यह सोचा, जो दिल में है वहीं बोल रहा हं . as a 'mass' man Making always spontaneous jokes and making us laugh and enjoy, he has proved that he is not only a 'mass' man, but also has the 'mass' mind' by showing as to how the mass can be helped in this democratic country

Then, I come to reservation. He has provided that a person, who has no reservation, can buy the ticket three days before the date of journey. It is a welcome measure.

Milkmen are struggling to carry their commodity. It is a very small matter. Many may not think it necessary to speak in Parliament about these milkmen. But in real life, lakhs of poor people carry milk from villages to towns to sell their milk. These people are facing transportation problem. The Budget provides that milk will be carried by trains through tankers or by any modern method.

Now, Sir, I come to safety Safety is a challenge, it is not an easy task भाषण देना बहुत आसान है लेकिन इंप्लीमेंट करना बहुत मुश्किल है। It is a big task Unfortunately, for several years and for several times, trains have been meeting with a lot of accidents. He says, यह दुख की बात है। So many people

are losing their life. Though, he has come forward and given the safety and security of passengers the top priority, we want his reply as to how he is. going to tackle this problem of accidents. Does he have any concrete plan? How is he going to avoid accidents? Does he have any comprehensive system? Previously, what were the main reasons of accidents? In the present system as the Railway Minister, what new incentives is he going to give? How is he going to achieve full safety and security for the passengers travelling by trains? In spite of announcement and providing fund, how is he going to implement plan for safety and security of passengers?

I am very happy that free passes will be provided to licensed porters and their shelters will be improved by providing funds to the extent of Rs. 5 crores. It is a welcome measure.

Of course, we are a little unhappy so far as new trains are concerned, although the hon. Minister has taken a lot of pain to introduce new trains. I do not want to repeat it; everybody knows how many trains have been introduced and how much budget has been allocated. Andhra Pradesh is one of the most important States and is a connecting State between the South and the North. Surprisingly, the Budget missed to provide greater importance and new trains to Andhra Pradesh. Instead of taking much time. I. along with all Members of Parliament from Andhra Pradesh, would give an exclusive representation to Laluji. I request that he must again re-examine this while giving reply. He must introduce more trains in Andhra Pradesh. I also represent Lord Balaji Temple. Earlier, there was a train between Kakinada and Tirupati, which is stopped now I request him to restart the train. A number of people from Delhi, Bombay, Kolkata and other important cities in the country want to take blessings of Lord Balaji of Tirupati So, I call upon him to connect Tirupati temple city with major cities, where thousands of people come - 55,000 people - come from all over the country. So, give an Opportunity to the common poor people to come to the temple by a passenger express train, by connecting Tirusati with all major cities like Delhi, Bombay, Calcutta, Bangalore, etc.

Then, Sir lastly, Railway Minister promised 32 new trains, extension of nine routes and increasing the frequency of service during 2004-05 in his first Railway Budget. Here, my request is that out of these 32 new trains, he can also satisfy Andhra Pradesh and also a few other States

which have lost representation in this list of 32 trains. Besides my supporting the Budget, I would like to request for more trains for Andhra Pradesh, which our friends from the Telugu Desam Party will also support me.

SHRI RAVULA CHANDRA SEKAR REDDY (Andhra Pradesh); You have showered all the praise on Railway Budget, but what your Chief Minister said is contradictory.

DR. T. SUBBARAMI REDDY: I did not understand, Please repeat.

SHRI RAVULA CHANDRA SEKAR REDDY: Your own Chief Minister, yesterday, issued a statement stating it is a Bihar Railway Budget, not the Indian Railway Budget.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA): You have a chance to speak.

DR. T SUBBARAMI REDDY: Sir let me clarify.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA): Don't get provoked.

DR. T SUBBARAMI REDDY: Sir, he did not understand my English.

THE VICE-CHAIRMAN (SHR! SANTOSH BAGRODIA): Okay, let him not understand.

DR. T. SUBBARAMI REDDY: Please give me a chance to speak. What I said is that in spite of giving 32 trains, he has missed Andhra Pradesh I have repeated the same thing which was stated by the Chief Minister. Perhaps, he did not understand. I said आंध्र प्रदेश मिस हो गया, इसके लिए सबको सपोर्ट करना चाहिए। Therefore, I did not differ with you... (Interruptions.)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA): He is talking about Andhra Pradesh. He does not represent all the States... (Interruptions). Mr. Subbarami Reddy, please address me. Don't address him.

DR. T. SUBBARAMI REDDY: Sir, my colleague has misunderstood grossly what I said in my communication. Sir, I said even though the Budget is very good, आंध्र प्रदेश मिस हो गया। All parties will definitely support demand for more trains for Andhra Pradesh Alongwith that, as a citizen of this country, I wanted some more trains for States, where already there is not sufficient number of trains, should be given priority.

Then, Sir, annual plan, which takes care of new projects, will now be Rs. 14,198 crores. He has succeeded in increasing the amount by Rs. 773 crores from the previous Government's Budget. I must also admire that. It is not a small amount. And, also the Minister said that safety and security would be given top priority, which I had already mentioned. The RPF will recruit 8000 men in next two months, which is a welcome measure. Then, measures to check increasing incidents of accidents on unmanned crossings will also be very important. Unfortunately, several times, at several crossings, several accidents take place. It is a small matter, but he has given due importance to it. It is a welcome measure. And, also personnel will be deployed at 19,000 such crossings. That is also very good. Then, Sir, work for providing anti-collusion devices will be undertaken for 1700 kms by North -Eastern Central Railway, for which our friends from North-East should feel happy.

Then, Sir, enhanced outlay on safety includes Rs. 2570 crores for track renewal. Sir, this is the most important aspect because tracks have become very old and unless we renew those tracks, there is always a risk element for the trains. And, I am very happy that the Budget has provided Rs. 2570 crores for the renewal of tracks. There is also an outlay of Rs. 528 crores for rebuilding and replacing of bridges, which is very important. There are a large number of bridges which are in very bad condition. Recently also, a tragedy took place, I think, in Orissa. So, the bridges are very important. I request the Minister to increase the allocation for rebuilding and replacing the bridges.

An outlay of Rs. 813 crores for signalling and telecommunication systems has been granted. Still signals are very outdated and they are leading to accidents. Therefore, I am happy that Rs. 813 crores are provided and here I want the Ministry to give much more priority to this aspect and to see that signalling system is much more modernised and see that maximum security and safety are given to passengers.

So, before giving one suggestion in conclusion, I would like to say that it is a very popular and balanced budget which touches the heart of the common man and not his pocket. It is also a very innovative budget in the right direction, and, for the first time, source of concern for the common man. I am also happy to know that this Budget gives emphasis on IT and application of IT tools for improvement of Railways functioning. Lastly, before concluding, I would like to give two suggestions.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA) Already, you have concluded twice

DR T SUBBARAMI REDDY Sir, the railway system should be made transparent and a review should be made to identify the loss-making operations. It is very important. The Ministry must see that all loopholes are plugged and there should be transparency. The Ministry should see that no losses are made so that it becomes much more efficient and useful for the people. Only then, the Railways will be in a position to take up the time-bound programme to eliminate loss-making operations. If any subsidies have to be given in railway operation to the weaker sections, it should be made transparent. The measures that the Railway Budget should include are structural reforms, introduction of high-speed trains and freight trains which is the need of the hour. Similarly, there should be a mention of lowering idle assets for commercial exploitation. So, before finishing my Budget speech, I, once again, request Lalu Prasad ji that he must consider the representation that the MPs from Andhra Pradesh are going to give and introduce the required number of trains in Andhra Pradesh and give more happiness to the people of Andhra Pradesh. Thank you

श्री अब् आसिम आजमी (उत्तर प्रदेश): उपसभाध्यक्ष महोदय, आज रेलवे बजट 2004-05 की चर्चा में आपने मुझे जो समय दिया मैं इसके लिए आपका धन्यवाद करता हूं। मैं सबसे पहले तो रेल मंत्री लालू प्रसाद यादव जी को बधाई देता हूं कि बजट में उन्होंने हर क्लास के लोगों का ख्याल रखा है। इसी के साथ मुझे यह चिंता भी है कि कहीं पहले की तरह से यह मुंगेरी लाल के सपने इस बजट में तो नहीं दिखाए गए हैं क्योंकि खर्च रुपया और आमदनी अठनी है। जैसे पहले इटावा में एक ओवर ब्रिज का पिछली कांग्रेस की मरकार में श्री जाफर शरीफ ने वायदा किया था और उसको पास किया था। परन्तु आज इतने भाल है। गए वह ब्रिज आज तक बना नहीं है। दूसरी एक खास चीज में रेल मंत्री जी के ध्यान में लाना चाहता हू कि वे अपने इस बजट में इसको जरूर शामिल करें। पिछली कांग्रेस की सरकार ने मदरसों में पढ़ने वाले छात्रों को अन्य पढ़ने वाले दूसरे स्कूलों के छात्रों की तरह से कंसेशन दिया था। परन्तु जब बी॰जे॰पी॰ की सरकार आई तो इसने मदरसे के बच्चों से वह कंसेशन छीन लिया। यह एक बहुत नाइंसाफी हुई माइनिरिटी के साथ। मैं चाहता हूं कि मंत्री जी अब के इस बजट में इसको शामिल करके मदरसों के बच्चों को कसेशन दें। रेल मत्री जी बजट में जो चीज लाए है उनको मैं दोहराना नहीं चाहता लेकिन कुछ चीजें ऐसी हैं जो उनके ध्यान में लाकर इसमें शामिल करवाना चाहता हूं। आपके माध्यम से मैं उन्हें बतलाना चाहता हूं कि उर्दू सरकारी ज्वान शैडयूलड नं॰ 8 की एक ज्वान है। आजादी के बाद तमाम रेलवे स्टेशनों

के नाम उर्दू में भी लिखे जाते थे। परन्तु धीरे-धीरे यह उर्दू का चलन स्टेशनों पर गायब होता गया और अब ऐसा हो गया कि बहुत थोड़ी जगहों पर रेलवे स्टेशनों के नाम उर्दू में नजर आते हैं। वह अंग्रेजों की ज़बान जो इस देश में परदेसी बनके आई थी अंग्रेज तो चले गए मगर वह ज़बान आज इस देश में दुल्हन की तरह से फल-फूल रही है। परन्तु इसी देश की ज़बान उर्दू के साथ एक सौतेलापन हो रहा है। तो मैं चाहता हूं रेल मंत्री जो से कि तमाम रेलवे स्टेशनों पर हिन्दी के साथ-साथ और ज़बान के साथ-साथ उसकी छोटी बहन उर्दू का नाम भी पूरे भारतवर्ष में लिखवाने की प्रथा पुन: शुरू कराएं।

मुम्बई देश के 50 माइनारिटी जनपदों में से एक जिला है, जहां 25 प्रतिशत लोग उर्दू बोलते हैं और उर्दू पढ़ते हैं। वहां 50 लाख लोग रोजाना लोकल ट्रेनों में सफर करते हैं। मैं मंत्री जी से कहना चाहता हूं, उनके ध्यान में लाना चाहता हूं कि वहां उर्दू में लिखवाना बहुत ही अनिवार्य है।

में एक और दूसरा मुद्दा उनके ध्यान में लाना बहुत जरूरी समझता हूं कि रेलवे एक बहुत बड़ा एम्पलायर है, बहुत बड़ी संख्या में लोग रेलवे में नौकरी करते हैं। आजादी के बाद 33 प्रतिशत माइनारिटी के लोग, अकलियत के लोग रेलवे में नौकरी करते थे, परन्तु धीरे-धीरे उनकी संख्या घटती चली गई है। आज यह हालत है कि माइनारिटी के दो प्रतिशत लोग रेलवे में नौकरी कर रहे हैं। मंत्री जी ने रेल बजट में प्रावधान किया है – दिलत के लिए, एस्प्सी॰,, एस्प्टीज़ के लिए, पिछड़ों के लिए, माइनारिटीज़ के लिए, लेकिन मंत्री जी इसमें माइनारिटी का कोटा फिक्स कर दें तो जो आज इस देश में माइनारिटीज़ की हालत खराब होती चली जा रही है, उनको रेलवे में लालू जो के माध्यम से कुछ काम मिल सकता है। आज मिनिस्टर ने 15 सूत्रीय प्रोग्राम जो अनाउंस किया है, उसमें रेलवे की भर्ती को भी शामिल किया जाये। यह भी मैं उनके ध्यान में लाना चाहता हूं। एक और खास चीज है कि रेलवे की भर्ती के लिए उर्दू अखबारात में इश्तहार नहीं दिये जाते हैं। उर्दू अखबारात में भी इश्तहार उसके प्रतिशत के अनुसार जैसे दूसरे अखबारात में दिये जाते हैं, वे भी देने चाहिए।

मुम्बई इस देश की इकॉनामिक केपिटल है, जहां तकरीबन 50 लाख लोग रोजाना ट्रेनों में सफर करते हैं। मगर वहां क्राईम बहुत बढ़ते जा रहे हैं इसिलये इस पर ध्यान देना बहुत जरुरी है। ट्रेनों में महिलायें सफर करती हैं,उनके लिए लोकल ट्रेनों में विकिंग आवर में चढ़ना और उतरना बहुत मुश्किल है, ऐसा लगता है कि कोई जंग करके आ रहे हैं। बहुत ही ज्यादा क्राइम महाराष्ट्र के अंदर बढ़ते जा रहे हैं। यह बिल्कुल सही है कि ला एंड आर्डर की सिचुएशन खराब है। औरतों के साथ ट्रेन के डिब्बों में कई रेप केसेज हुये हैं। इसिलए मैं यह बात इनके ध्यान में लाना चाहता हूं। मुम्बई एक इकॉनामिक केपिटल है और यदि वहां इस तरह से लोकल ट्रेनों में सिक्योरिटी का सही बंदोबस्त नहीं होगा तो बहुत ही इकॉनोमिक हानि इस देश को पहुंचेगी। खासतौर से ट्रेनों मे, चाहे

फर्स्ट क्लास का डिब्बा हो, चाहे सेकेंड क्लास का डिब्बा हो, कोई भी टिकट लेकर उसमें बैठ नहीं सकता है, खड़े होकर ही यात्रा करनी पड़ती है। अगर यात्री अपने कपड़ों पर स्त्री करा कर, उन्हें पहन कर जाता है तो उसका कपड़ा खराब हो जाता है। कम से कम और कुछ ट्रेनों का बंदोबस्त करना चाहिए। इनकी कैपेसिटी बढ़ानी चाहिए, क्योंकि मुम्बई की ट्रेफिक बहुत ज्यादा होती जा रही है। अगर 20 किलोमीटर का सफर करना है तो कभी-कभी दो घंटे का समय लग जाता है। लोग ट्रेनों के सफर को ज्यादा प्रायोरिटी देते हैं इसलिए लोकल ट्रेनों में सफर की केपेसिटी बढ़ायी जानी चाहिए।

एक और चीज है। कॉकण रेलवे के हादसे को क्ह दिया गया कि यह कुदरती हादसा है। इसको कुदरती हादसा कहकर दाला नहीं जा सकता है। मैं कहना चाहता हूं कि कॉकण में रेलवे की सिक्योरिटी के लिए और वहां पर आगे हादसे न हों, एक बहुत सीरियस तौर पर मंत्री जी को कदम बढ़ाना पड़ेगा।

महाराष्ट्र के हिंगोली जिले में पूर्ण से अकोला तक पटरी बनाने का काम पिछले कई सालों से अधूरा पड़ा हुआ है। दो साल से काम शुरू हुआ है, सिर्फ दो बिज बने हैं। इसका करीब सवा दो सौ करोड़ रूपये का बजट है और सिर्फ 20 करोड़ रुपया उसको दिया गया है। एक साल में 20 करोड़ दिया है, तो इस हिसाब से यह कितने साल में पूरा होगा। इसका खर्च सवा दो सौ करोड़ के स्थान पर बढ़कर पांच सौ करोड़ का हो जायेगा, यदि इसी तरह से धीरे-धीरे काम होगा। इस पर जल्द से जल्द ध्यान देने की जरूरत है।

मैं मंत्री जी से एक और आग्रह करना चाहता हूं कुछ ट्रेनों के बारे में, जैसे दिल्ली-आजमगढ़ और दिल्ली-मुम्बई के ट्रैफिक को देखते हुए। उत्तर प्रदेश में पूर्वांचल के अंदर बहुत से ऐसे लोग हैं जो विदेशों में नौकरी करते हैं और उनके लिए आने-जाने की सुविधाएं सही नहीं हैं। देहली से आजमगढ़, देहली से मुम्बई की ट्रेनों की तादाद बढ़ायी जानी चाहिए। आजमगढ़ का जो प्लेटफार्म है, उसके बारे में कई लोगों का मेमोरेंडम आया हुआ है कि वह प्लेटफार्म बहुत पुराना है, उस प्लेटफार्म का जल्द से जल्द आधुनिकीकरण किया जाये। एक कैफियत ट्रेन आजमगढ़ से जिसका छूटने का समय 9 बजे रात का है, यदि यह तीन बजे छूटती है तो देहली आने वाला आदमी सुबह आकर अपना काम कर सकता है। इसलिए उसका समय रात 9 बजे के बजाय तीन बजे या एक दो घंटे आगे पीछे कर दिया जाये। देहली से आजमगढ़ की तरफ जाने वाली ट्रेन का समय रात को 12 बजे का है, उसके बजाय उसका समय 9 बजे कर दिया जाये तो इससे बहुत सारे लोगों को सुविधा होगी। यह ट्रेन पुरानी दिल्ली से छूटती है, अगर इसे नई दिल्ली से छोड़ दिया जाए तो ज्यादा अच्छा होगा। इसके अलावा इसमें एसी सेकिंड क्लास का डिब्बा नहीं है, उसे भी लगवाने का काम किया जाए। दूसरी यह कैफियत ट्रेन रोजाना चार, छ: आठ घंटे लेट चलती है। ट्रेनों में सफर करने

बाले को यह मालम नहीं होता कि वह गंतव्य स्थान पर कब पहुंचेगा। इस प्रकार एक तो सिक्योरिटी का मामला है और दसरा समय का मामला है। आपने टेनेंं के फेयर्स पर बहुत ध्यान दिया है, उसमें गरीबों का ध्यान रखा है गरीबों को भदद मिल रही है. यह सब चीजें प्रशंसनीय है। परन्त उसी के साथ-साथ सिक्योरिटी पर और जो टेर्ने लेट चलती हैं. उस पर भी ध्यान देने की जरूरत है। मुजफ्फरपुर से लिच्छवी ऐक्सप्रेस में एसी फर्स्ट क्लास का डिब्बा नहीं है,उसे लगवाया जाए और तीन दिन तक इसे वाया आजमगढ़ चलाया जाए, यह वहां के लोगों की मांग है। महोदय, टेनों में सुविधाएं बहुत बढ़ायी गयी हैं परन्तु सुरक्षा के लिए कोई खास ध्यान रखा गया हो, यह नजर नहीं आया है। टेनों में सुरक्षा पर ध्यान देना बहुत जरूरी है। पूर्वी उत्तर प्रदेश के बहुत सारे प्लेटफार्मों पर पिछले दिनों बहुत सारी शिकायतें मिलीं कि बहुत सारे लोग जो बेचारे बाहर से रोजी-रोटी कमाकर मुम्बई से और खाड़ी देशों से, गल्फ से आते हैं, स्टेशन के प्लेटफार्म पर कुछ प्रप्स द्वारा उन्हें कुछ नशीली चीजें खिलाकर कई बार लुट लिया जाता है। इसलिए इस और ध्यान देना बहुत जरूरी है और जो सिक्योरिटी के लोग हैं, सिक्योरिटी एजेंसीज़ को टाइट करना जरूरी है। महोदय, आज़मगढ़ के प्लेटफार्म को देखकर ऐसा लगता है कि जंगल में कोई स्टेशन है। स्टेशन पर उतरते समय प्लेटफार्म पर आने के लिए जब तक कोई टेबल न रखो. आदमी उतर नहीं सकता है। इतना अंतर प्लेटफार्म और गाड़ी के दरवाज़े से नीचे उतरने का है। अगर कोई सीनियर सिटिजन है तो उसके लिए उतरना बहुत मुश्किल होता है और ट्रेन भी बहुत थोड़े समय के लिए वहां रुकती है। इसलिए इन स्टेशनों का आधनिकीकरण जल्द से जल्द किया जाना चाहिए। मैं रेल मंत्री जी को धन्यवाद देना चाहता है कि पिछले दिनों गुजरात में जो गोधरा कांड हुआ, उसके लिए रेल मंत्री जी ने बार-बार अनाउंस किया है और गोधरा कांड की इन्क्वायरी का मामला उठाया है। यह मामला जल्द से जल्द उठाया जाना चाहिए और जो भी लोग इसमें दोषी हाँ, उनको सजा मिलनी चाहिए। परन्तु उसी के साथ-साथ पिछले दिनों रेलवे में भर्ती के लिए कुछ लोग महाराष्ट्र गए थे। महाराष्ट्र में उनके साथ जिस तरह से सलक किया गया, वह निंदनीय है। महोदय, 17 हजार लोगों की भर्ती होनी थी जिसके लिए 75 लाख लोगों ने अप्लाई किया। इस देश के अंदर बेकारी है। जो खलासी की नौकरी की पोस्ट थी, उसके लिए बीग्एसम्सी॰, एम्म्एसम्सी॰ और पीएक्नडी॰ लोगों ने अप्लाई किया और उसके बाद तीन दिन तक भूखे नौजवान जब भुम्बई में कल्याण पहुंचे तो एक राजनैतिक पार्टी ने उनके साथ जिस तरह से दर्व्यवहार किया. उसे देखकर ऐसा लगा कि वे लोग किसी अन्य देश से आए हुए लोग हैं अथवा वे लोग बंगलादेश या पाकिस्तान के शरणार्थी है। इस तरह से इसकी भी इन्क्वायरी होनी चाहिए और जिन लोगों ने यह कदम उठाया, उनके विरुद्ध कठोर कार्यवाही की जानी चाहिए ताकि दोबारा कोई यह काम न करने पाए। इस बजट में अपनी कुछ मांगे रखने के साथ-साथ मैं इस बजट के लिए अपने माननीय मंत्री श्री लालु प्रसाद जी को बहुत-बहुत बधाई देता हूं और इस बजट का सपोर्ट करता है।

ری ابدعاصم اعظمی " اتر بردایش": أب سبا ادمکش مود، آج ریاد، بب ۔۔ 2004-2005 کی چرچی آپ نے جھے جو وقت دیا یس اس کے لئے آپ کا دھنو اد کرتا ہول۔ مسسب سے پہلے قور بل منتری لالویرسادی کو بدھائی دیتا ہوں کہ بجٹ میں انہوں نے برکائی کے لوگوں کا خیال دکھا ہے۔ای کے ساتھ چھے یہ چان ہی ہے کہیں پہلے کی طرح سے بدیکیری لال کے سینے اس بجٹ یں وجی دکھائے مجے ہیں کیوں کرفری روپیاور آمدنی افتی ہے چے پہلے اٹاوہ عل ایک اوور برج کا ميل كاكريس مركارين شرى جعفرشريف في وعده كيا فعااوراس كوياس كيا تعاد ليمن آج اعد سال موصح وه برج آج تك ين بناب ووسر كالك خاص جزيش ريل منترى في كوهيان بن لانا جابنا مول كدوه اسيداس بجديث اس كوخرورشال كرير ميكل كالحريس كاسركار في مدرسول شي يز عين والسلطاباءكو دوسرے بڑھنے والے دوسرے اسکولوں کے جہاروں کی طرح سے منبیقن دیا تھا۔ کین جب بی ہے بی کی سرکار آئی تو اس نے مدرے کے بیج سے وو مسیقن چین نیا۔ بدالیک بہت ناانسانی مولی ما کارٹی کے ساتھے۔ بیں جابتا ہوں کم معری ہی اب کے اس بجٹ بی اس کوشائل کر کے مدرسوں سے بھول کو مسیقن ويرر مل منترى تى بجد يش جويز لائ بيس اس كوش دوبرانا تيس جابتا ليكن بحديث بالك بي جوان كوميان يس لاكراس يس شاف كروانا جابتا مول - آب ك ماديم سے يس اليس بنانا جابتا مول كداردو مرکاری زبان شیر ول فبر ۸ کی ایک زبان ب آزادی کے بعد تمام دیلوے اشیشنوں کے تام اردو يم مى كليے باتے تھے ليكن دير دور سدوير سيدارووكا بلن اششنول يرفائب بوتا كيا اوراب ايها بوكيا ہے کہ بہت تھوڑی جمہوں پر بلوے اشیشنوں کے نام اردوش فطراتے ہیں۔ وواگر بنائ کی زبان جو اس دیش میں پردیسی بن کرآئی ہے، انگریز تو علے معظروہ زبان آج اس ملک میں ایس کا طرح سے میل پیول ری ہے لیکن ای دلیل کی زبان اردو کے ساتھ ایک سوتالا پن مور باہے۔ تر ش جامتا مول ر مل منتری جی سے کہ تمام ریلوے اشیشنوں پر ہندی کے ساتھ ساتھ اور زبان کے ساتھ ساتھ اس کی چھوٹی بمن اردوكانام بمى بورے بمارت ورش ش كھوانے كا بلن دوبارہ شروح كراكي -

ممکن ملک کے ۵۰ ما کارٹی جن پدول میں سے ایک شلع ہے، جال ۲۵ فیصد لوگ اردو بولے بیں اور اردو پر سے بیں دہاں کا کھاوگ روز اند لوکل ٹرینول میں سٹر کرتے ہیں۔ میں مشری تی ہے کہنا جا بتا ہوں کہ وہاں اردوش کھوانا بہت می شروری ہے۔

میں آیک اور دومرا ما ان کے دھیان میں لانا بہت ضروری جمتا ہوں کر بلوے آیک بہت ہوا ایک ایک بہت ہوا ایک کوگ، ایک ان کے دوگ است کے لوگ رہے ہیں۔ آزادی کے بعد ساست بھی تعداد میں لوگ کوگ کوگ ان بیا لڑے ہے ان کوگ رہے ہے، لیکن آہت آہت ان کی تعداد کمی بلی تی آئی ہوات ہے کہ انکار فی کے دوفیعد لوگ رہا ہو ہے میں اوکری کر رہے ہیں مشری می نے رہل بجٹ میں پراؤدھان دیا ہے کہ مانکار فی کے دوفیعد لوگ رہا ہو ہے میں اوکری کر رہے ہیں مشری می نے رہل بجٹ میں پراؤدھان دیا اس میں مانکار فی کا کو فیکس کرویں تو جو آج اس دیل میں مانکار فی کا کو فیکس کرویں تو جو آج اس دیل میں مانکار فی کا کو فیکس کرویں تو جو آج اس دیل میں مانکار فی کے مادھ ہے کہ کوگام ل سکتا ہے، آج مشرصا حب نے 10 لگاتی پروگرام جو اناولس کیا ہا ہے۔ یہی میں ان کے دھیان میں لانا چاہتا ہوں۔ ہے اس میں رہا ہے کہ برق کو گئی شامل کیا جائے۔ یہی میں ان کے دھیان میں لانا چاہتا ہوں۔ ایک اور خاص جیز ہے کہ دیلے میں ان کے دھیان میں لانا چاہتا ہوں۔ ایک اور خاص جیز ہے کہ دیلے میں ان کے دھیان میں لانا چاہتا ہوں۔ ایک اور خاص جیز ہے کہ دیلے میں ان کے دھیان میں دیے جاتے ہیں، ادر داخبارات میں جیز ہو کہ دیلے جاتے ہیں، ادر داخبارات میں جیز ہو کہ دیلے جاتے ہیں، ادر داخبارات میں جیز ہو کہ دیلے جاتے ہیں، ادر داخبارات میں دیے جاتے ہیں، ادر داخبارات میں جیز ہو کہ کی اس کی فیصد کے مطابق، جیسے دومرے اخبارات میں دیے جاتے ہیں،

مین اس ملک کی اکانا کمیش ہے، جہاں تقریباً ۵۰ لاکولوگر وزاند ٹرینوں ہی سنز کرتے
ہیں۔ گردہاں کرائم بہت بوجے جارہ ہیں اس لئے اس پر دھیان دینا بہت شروری ہے۔ ٹرینوں ہی مہیا کی سفر کرتی ہیں ان کے لئے لوگل ٹرینوں ہی ورکنگ آورز ہیں چر ھنااورا ترنا بہت شکل ہے، ایسا لگا ہے کہ کوئی جگ کر کے آ در ہے ہیں۔ بہت تی زیادہ کرائم مہارا شر کے اند بوجے جارہ ہیں۔ بہوا ہے یا لگل کے کہ لا واجد آ دوری صالت فراب ہے۔ مورتوں کے ساتھ فرین کے وابوں ہی دیہ ہوا ہے اس لئے ہی ہوا ہے اس لئے ہی ہے بات ان کے دھیان ہی لانا جا ہتا ہوں۔ مینی ایک اکانا کم کیشل ہے اورا کر دہاں اس ملک کو پہنے گا طرح ہے اوکل ٹرینوں ہی سیکورٹی کا می بندو بست نہیں ہوگا تو بہت ہی اکانوک نقصان اس ملک کو پہنے گا

خاص طور سے فرینوں ہیں، چاہے فرسٹ کلاس کا ذہبہ ہو، چاہے سکنڈ کلاس کا ذہبہ ہو، کوئی مجی کشٹ لے کر

اس ہیں بیٹے بیں سکتا ہے، کھڑے ہو کرئی سفر کرنا پڑتا ہے۔ اگروہ پر لیس کرا کر کیڑے ہی کن کرجار با

ہو چورا کا پورااس کا کیڑا خراب ہوجا تا ہے، کم سے کم اور پھی ٹرینوں کا بندو بست کرتا چاہیے۔ ان کی

کھیٹی بدھائی چاہے، کیونکہ مینی کا ٹریفک بہت زیادہ ہوتا جار ہا ہے۔ اگر ۲۰ کلویٹر کا سفر کرنا ہے تو بھی

مجھی دو کھنے کا وقت لگ جاتا ہے۔ اوگ ٹرینوں کے سفر کوزیادہ ترجے وسیتے ہیں۔ اس لئے لوکل ٹرینوں

میں سفر کی کھیٹی بدھائی جائی چاہیے۔

- ایک اور چزہے ۔ کوکن ریلوے کے حادثہ کو کہدیا گیاہے کہ یہ قدرتی حادثہ ہے۔ اس کو قدرتی حادثہ ہے۔ اس کو قدرتی حادثہ کی کا دروہاں پر قدرتی حادثہ میں کہنا جا ہتا ہوں کہ کوکن ریلوے کی سیکورٹی کے لئے اور وہاں پر آگے حادثہ دروں ، ایک بہت جیدہ طریقے ہے منتری تی کوقدم بن حانا بڑے گا۔

مباراشر کے منکو فی شلع میں پورنا سے اکولاتک پٹری بنانے کا کام دیکھلے کی سالوں سے ادھورا پڑھا ہوا ہے دوسال سے کام شروع ہوا ہے مرف دوئل سنے ہیں اس کا قریب ہوا دوسو کروڈ روپے کا بجٹ ہے اور صرف ۲۰ کروڈ روپے اس کو دیا گیا ہے ایک سال میں ۲۰ کروڈ دیا ہے تو اس صاب سے یہ کننے سال میں پورا ہوگا۔ اس کا فرج سوادوسوکروڈ کی جگہ ہو ہدک کروڈ فرج ہو جائے گا۔ اگر اس طرح سے دھے سے دھے سے کام ہوگا۔ اس پرجلد سے جلدو حیان دینے کی ضرورت ہے۔

یں منتری تی ہے ایک اور در فواست کرنا چاہتا ہوں پھٹریؤں کے بارے میں، چیے ویلی۔
اعظم گڑھ اور دیلی مین کے لیک کودیکھتے ہوئے از پردیش میں پردا چل کے اعربہت ہے ایک فوگ ہیں جو ودیش میں بردا چل کے اعربہت سے ایک فوگ ہیں جو دویش میں فوکری کرتے ہیں اور ان کے لئے آنے جانے کے ہوئیتیں گئی ہیں۔ ویل سے مین کی ٹرینوں کی تحداد ہو حالی جانی چاہئے۔ اعظم گڑھ کا جو بلیٹ قادم ہے، اس کے بارے میں کی لوگوں کا میمور ہنڈم آیا ہوا ہے کہ دہ پلیٹ فارم بہت پرانا ہے، اس پلیٹ فارم کی جلدے جلد جدید کاری کی جائے۔ ایک کیفیات ٹرین اجظم گڑھ ہے جس کا مجدوثے کا وقت کو جلدے جلد جدید کاری کی جائے۔ ایک کیفیات ٹرین اجظم گڑھ ہے۔ ایک کیفیات ٹرین اجظم گڑھ ہے۔ اس لئے اس

مهدد، ٹریوں بی ہولیتی بہت بوحال کی ہیں جن مان کی ہیں کا تھا ہے۔ کہ کوئی خاص وحیان رکھا کی ہو، یہ نظر میں آیا ہے۔ ٹریوں میں سرکٹا پر دھیان دینا بہت ضرورتی ہے۔ پوردی اتر پردیش کے بہت سارے پلیٹ فارم پر دھی ہوں بہت سارے بلیٹ ارے لوگ جو بے ہارے باہرے روزی روثی کا کرمٹی ہے اور کھاڑی دیٹوں ہے، گلف ہے آتے بھی، اشیشن کے بلیٹ قارم پر بکھ کردیوں کے دریوں کے دریور ایک کی بارلوث لیا جاتا ہے۔ اس لئے اس طرف وحمیان دینا بہت ضروری ہے اور جمیکورٹی کے لوگ جی، سکورٹی ایکنیز کو ٹائٹ کرناضروری ہے۔

مودے، اطلام کر دے بلیٹ قارم کود کی کرایدا لگاہے کہ جگل ہی کوئی اجھیں ہے۔ اطبیع ن ہے۔ اطبیع ن ہے۔ اطبیع ن ہے۔ اتر قبل نے دفت بلیث قارم کی آئے کے لئے جب تک کوئی جمل ندر کھو، آدی از نہیں سکا ہے۔ اتنافر ق بلیث قارم ادر گا ڈی کے درواز سے سے جے اتر نے کا ہے اگر کوئی سنٹر سٹیز ن ہے تو اس کا اتر نا بہت مشکل ہوتا ہے فرام ادر گا دی بہت تھوڑے وقت کے لئے وہاں رکتی ہے۔ اس لئے ان اسٹیشنوں کی جدید کاری جلد سے جلد کی

جانی چاہے۔ میں ریل منٹری تی کورصنے اور یہ جا بتا ہوں کر کھیلے دنوں گرات میں جو کودھرا کا افر ہون،
اس کے لئے ریل منٹری تی تے بار بارانا وائس کیا ہے اور کودھراکی اکوائری کا معاملہ افعا با ہے ہے معاملہ جلد
سے جلد افعا با جانا جا ہے ہے اور جو کھی لوگ اس میں تصور وار ہوں انہیں سز المنی چاہئے۔ لیکن اس کے ساتھ ساتھ دوس ریلو ہے میں بحرتی کے لئے بچولوگ میا راشر کھے تھے۔میاں شریص ان کے ساتھ جس طرح سے سلوک کیا محماوہ شرعنا کے سے۔

مبودے، کا بڑارلوگوں کی بحرتی ہوئی تھی جس کے لئے ۵ کالا کو لوگوں نے اپیلائی کیا اس PhD مبودے، کا مدر ہے ہو خلاصی کی ٹوکری کی بوسٹ تھی اس کے لئے BSC, MSC اور اس کے بعد تین دن تک بھو کے فوجان جب ممئی سے کلیان پہنے تو ایک سیا ک پارٹی نے اور اس کے بعد تین دن تک بھو کے فوجان جب ممئی سے کلیان پہنے تو ایک سیا ک پارٹی نے ان کے ماتھ جس طرح سے براسلوک کیا، اسے دکھ کر ایسالگا کہ وہ ٹوگ کی دومرے ملک سے آئے ہوئے وگوگ ہیں، بینی وہ ٹوگ بھے دیش یا پاکستان کے شرنارتی ہیں۔ اس طرح سے اس کی جی الکوائری ہوئی چاہئے تاکہ افوائری ہوئی چاہئے تاکہ دوہارہ کوئی ہی کا دوائی کی جائی چاہئے تاکہ دوہارہ کوئی ہی کام ترک نے باتی جائے ہیں۔ اس بجٹ میں بھی ماتھ میں اس بجٹ کے لیے اپنے باتھ میں اس بحث کے لیے اپنے باتھ میں اور اس بجٹ کا سپورٹ کرتا ہوئی ا

द्धाः प्रभा ठाकुर (राजस्थान): धन्यवाद उपसभाध्यक्ष महोदय, रेल बजट पर जो सदन में चर्चा हो रही है, उस पर अनेक माननीय सदस्य बजट पर अपने विचार रख चुके हैं। अगर रेल बजट के बारे में एक पंक्ति में कहा जाए तो रेल मंत्री जी ने ऐसा बजट प्रस्तुत किया है जिसे ''सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय'' कहा जा सकता है। यह मैं ही नहीं कह रही हूं बल्कि पूरे देश की जनता में जो प्रतिक्रिया है, उसे ही मैं उद्धृत कर रही हूं। कल ही टीवी पर किसी चैनल में सर्वे में यह बताया गया कि इस बजट के लिए जो जनमत संग्रह हुआ, उसमें 85 फीसदी लोगों ने इस बजट की प्रशंसा की और इसे आम जनता के लिए अनुकूल और अच्छा बजट बताया। उस आधार पर मैं यह बात कह रही हूं। मुझे यह कहते हुए और भी प्रसन्तता का अनुभव हो रहा है कि कांग्रेस का एक मूल नारा था, प्रमुख नारा था कि ''कांग्रेस का हाथ, आम आदमी के साथ'', इस बजट के द्वारा आम आदमी

को जो राहत दी गई है हर प्रकार से, इसे देखते हुए मैं माननीय प्रधान मंत्री जी को भी बधाई देना चाहती हूं कि वह संकल्प पूरा हुआ है और जो यह यू॰पी॰ए॰ की सरकार चल रही है, उसने उस आम आदमी के साथ होने के वादे को इस रेल बजट में पूरी तरह से निभाया है।

महोदय, इस रेल बजट की जो प्रमुख विशेषताएं हैं, पहले में उन पर कुछ कहना चाहूंगी। उसके लिए रेल मंत्री जी भी साधुवाद के पात्र हैं और उनके तमाम सहयोगी भी और वे सब लोग भी साधुवाद के पात्र हैं जिनकी इसके पीछे अगर कहीं सलाह और सद्भावना रही है जैसा सदन में अभी हमारे एक माननीय सदस्य कह रहे थे। इस बजट की विशेषताएं ये हैं कि यह किसी एक खास वर्ग को लुभाने वाला नहीं बल्कि आम वर्ग, गरीब वर्ग के लोगों को ध्यान में रखकर इस बजट को बनाया गया है। इस बजट के द्वारा मजदूरों को, ग्रामीण जनता को रोजगार मिलने के साथ ही गरीबों के लिए, पिछड़ों के लिए, समाज के जो कमज़ोर वर्ग हैं – एस॰सी॰ और एस॰टी॰ के, चाहे पिछड़े वर्गों से जुड़े हुए लोग हैं, उन्हें इस बजट में विशेष रियायतें देकर रेल मंत्री जी ने यह प्रमाणित किया है कि वे स्वयं भी जमीन से जुड़े हुए व्यक्ति हैं।

महोदय, रेल बजट केवल मनमोहक ही नहीं है बल्कि व्यावहारिक भी है। भारतीय रेल का एक दीर्घकालीन गौरवशाली इतिहास रहा है इस देश में और आज भी इस देश में जो अधिकांश जनता है, वह जब दूरगामी यात्रा करती है तो रेल पर ही निर्भर करती है। रेल इस देश में सम्पर्क का एक सबसे बड़ा और सशक्त माध्यम रहा है और इसके विकास का एक लंबा इतिहास रहा है। आम आदमी इसमें सफर करता है, इसलिए बहुत जरूरी है क्योंकि आम आदमी की तादाद इसमें सफर करते वक्त अधिक होती है, इसलिए उनकी सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा जाए और वह ध्यान, मुझे खुशी है कि इस बजट में रख गया है।

महोदय, इस रेल बजट में पारंपरिकता और आधुनिकता का एक अच्छा सामंजस्य दिखाई देता है। पारंपरिकता की बात करें तो जो एक पहले से, खास करके ग्रामीण क्षेत्रों में जो प्रचलित रहा है कुल्हड़ों का प्रयोग, मिट्टी के कुल्हड़ का प्रयोग, यदि प्लास्टिक के पात्र प्रयोग में लिए जाते हैं तो वे पर्यावरण के लिए भी ठीक नहीं माने गए हैं, उनके स्थान पर मिट्टी के कुल्हड़ का उपयोग अच्छा है। स्वास्थ्य के अलावा इससे कई ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को रोजगार मिलेगा, इस नाते भी एक अच्छी शुरूआत की है। खादी और हाथ से बने हुए कपड़ों का उपयोग रेल के पदों में या सीट के कवर आदि में किया जाना, इससे भी ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को रोजगार मिलेगा और यह एक अच्छी शुरूआत है। इस प्रकार रेल मंत्री जो ने स्वदेशी को कहीं. बढ़ावा दिया है। स्वदेशी रोजगार जिसे कहते हैं, जो बुनकर वर्ग है उनका ध्यान रखा है। कई लोग स्वदेशी की सिर्फ बातें करते रह गए लेकिन मुझे प्रसन्तता है कि इस बजट में वाकई स्वदेशी के लिए सोचा गया और उस बात को अमल में लाते हुए खादी के प्रयोग और हथकरघा द्वारा बनाए गए कपड़े के प्रयोग की बात इसमें की गई है।

आधुनिकता के सामंजस्य को देखा जाए तो कंप्यूटरीकरण और कंप्यूटर पर आधारित ट्रैफिक कंट्रोल सिस्टम, जो कि सुरक्षा के लिए एक बहुत ही जरूरी चीज है, रेल यात्रियों की सुरक्षा के लिए बहुत ही आवश्यक है तथा साथ ही कंप्यूटर ऑन लाईन टेंडर की प्रणाली—इसके भी बड़े अच्छे दूरगामी नतीजे आएंगे। इससे भ्रष्टाचार कम होने के अलावा जो कुछ माफिया के लोग, जो अब तक अपनी आतंकवादी गतिविधियों से कई लोगों को टेंडर नहीं भरने देते थे, उससे भी निजात मिलेगी, मुक्ति मिलेगी—यह भी एक अच्छा कदम है।

इस बजट में जो स्वागत योग्य कदम हैं और इसके अलावा जो कुछ चिंताएं हो सकती हैं जो कोई किमयां हो सकती हैं और जो सुझाव हो सकते हैं, वे सभी मैं क्रमश: प्रस्तुत करूंगी। यात्रियों की सुविधा एक बहुत ही जरूरी चीज है, लेकिन इसमें साधुवाद की बात यह है कि यात्रियों के किराए और मालभाड़े में तो वृद्धि नहीं की है लेकिन यात्रियों को दी गई रियायतों और सुविधाओं में पृद्धि की है। इसलिए मैं रेल मंत्री जी से यही कहना चाहूंगी कि आपने जो ये सुनहरे वायदे किए हैं और जो आम आदमी को ये सुनहरे तस्वीर दिखाई है, इनको पूरा करने के लिए क्षेस कदम उठाने की आवश्यकता होगी ताकि इस बजट में वाकई जैसा कहा है वैसा ही बजट बनकर के इसकी क्रियान्विती हो। यह केवल ड्रीम बजट बनकर न रह जाए।

विभिन्न सुविधाओं के लिए जो 215 करोड़ का खर्च रखा गया है, यह बहुत आवश्यक है। वैसे हमारे साथियों ने यहां पर विभिन्न आंकड़े दे दिए हैं। इसिलए मैं और ज्यादा आंकड़ों पर बात नहीं करूंगी। लेकिन यात्रियों को बेहतर खान-पान की सुविधाओं के लिए, साफ-सफाई की सुविधा के लिए, द्वितीय क्षेणी में अनारक्षित प्रणाली की सुविधा के लिए और यात्रियों को रिजर्वेशन सिस्टम के लिए, 74 और नए स्थानों के विस्तार के लिए तथा इन सारी घोषणाओं के लिए निश्चित रूप से रेलमंत्री जी साधुवाद के प्राप्त हैं। अगर हम यह कहें कि यह बजट आर्थिक दृष्टि से व्यावहारिक है क्योंकि रेलवे के राजस्व में वृद्धि के लिए यात्री किराए और मालभाड़े में तो वृद्धि के लिए यात्री किराए और मालभाड़े में तो वृद्धि के लिए यात्री किराए और मालभाड़े में तो वृद्धि के सिख्या में और माल दुलाई में वृद्धि हो, रेलवे के आर्थिक विकास के लिए यह एक अच्छी और सकारात्मक सोच है। अब तक जो रेलवे का स्क्रैप बाहर बेचा जा रहा था उसको फिर से री-साइकल करके उपयोग करने की जो बात कही गई है यह एक स्वागत योग्य कदम है।

इसी प्रकार अब रेल मंत्री जी ने जो छपरा में नई पहिया इकाई के निर्माण की बात कही है और उसके साथ ही यह भी कहा है कि वहीं पर रा-मेटरियल भी मिलता है। यदि देखा जाए तो बिहार अपने आप में एक पिछड़ा प्रदेश तो है ही साथ ही एक गरीब प्रदेश भी है। उसमें क्या बुराई है? बिल्क यह एक स्वागत योग्य कदम है कि आम जनता को रेल मंत्री जी ने जो इतनी रियारतें दी हैं अगर छपरा में बिहार के श्रीमकों को भी काम मिले और वहां पर उचित लागत में पहियों का निर्माण हो तो यह भी एक स्वागत योग्य बात है। इसमें कोई आलोचना की बात दिखाई नहीं देती है। इससे वहां के ग्रामीणों, गरीब पिछड़े लोगों और कमजोर वर्ग के लोगों को रोजगार मिलेगा। इसलिए इसका स्वागत किया जाना चाहिए और मैं इसका स्वागत करती हूं।

रोजगार की दृष्टि से भी यह रेल बजट बहुत ही उपयुक्त है। इस रेल बजट में रेल मंत्री जी ने हजारों लोगों को रोजगार देने की बात कही है और एक बहुत ही अच्छी बात यह कही है कि केन्द्रीय नौकरियों में साक्षात्कार के लिए जो बेरोजगार जाएंगे उनको किराए में पूरी छूट मिलेगी। इसका भी में स्वागत करती हूं। नई नौकरियों में पिछड़ों के लिए, ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के लिए, अल्पसंख्यक लोगों के लिए, एससी, एससीटी के लोगों के लिए और समाज के दलित और कमजोर लोगों के लिए हजारों की तादाद में उन्हें नौकरी के नए अवसर मिलेंगे। इस बात की भी मैं प्रशंसा करती हूं।

मानवीय दृष्टिकोण की सराहना करते हुए इस रेल बजट में जो मानवीय पक्ष रखा गया है, उसकी सबको सराहना करनी चाहिए क्योंकि रोगियों को रियायत देने के लिए हीमोफीलिया के पेशेंट्स को ए॰सी॰ रियायत और उन सैनिकों की विधवाओं को रियायत जो अभी आतंकवादी हमले का मुकाबले करते हुए शहीद हुए हैं, यह एक मानवीय दृष्टिकोण रेल मंत्री जी ने दिखाया है और साथ ही संवेदनशीलता भी दिखाई है। पिछड़ों, कमजोर वर्गों, वृद्धों, विकलांगों, मूक, बिधर लोगों और महिलाओं को भी संरक्षण दिया है, उनके हितों को ध्यान में रखा है। इसके लिए भी रेल मंत्री जी बधाई के पात्र हैं। उन्होंने सामाजिक न्याय की एक मिसाल कायम की है क्योंकि उन्होंने कुलियों के लिए भी सोचा है। शायद ऐसा पहली बार हुआ है। जो श्रमिक वर्ग है, प्लेटफार्म पर जो कुली सामान ढोते हैं, उनके लिए तथा उनके परिवार के लिए, उनकी पत्नी के लिए, यदि वह अगर अपने कार्य स्थल से कहीं तक जाते हैं तो उन्हें यात्रा के लिए एक मुफ्त पास मिलेगा।

रेल मंत्री जी ने यह बहुत ही अच्छी मानवीय संवेदनशीलता दिखाई है। संवेदनशीलता यह दिखाई है कि कुलियों के रैन बसेरे के लिए, उन्हें विश्राम स्थली के लिए कोई उचित स्थान चाहिए, इसके लिए उन्होंने पांच करोड़ की निधि का आवंटन किया है। यह भी एक स्थागत योग्य कदम है। इससे उन्होंने सामाजिक न्याय की दृष्टि का एक संदेश दिया है। रेलवे प्लेटफॉर्म्स पर व्हीलर बुक्सस्टाल्स की जो मोनोपोली थी, उस मोनोपोली की जगह अब इसमें अनेक स्थानों पर कमजोर वर्ग के लॉगों को कुछ स्टाल लगाने का अवसर मिलेगा। इस प्रकार उन्हें रोजगार मिलेगा, अनेक बेरोजगार लोगों को इसके जरिए रोजगार मिलेगा, यह भी एक स्थागत योग्य कदम है। महिलाओं को टीग्सी॰ के रूप में, टिकट चैकर के रूप में नौकरियां मिलना और उनकी सुरक्षा के इंतजामात भी एक स्थागत योग्य कदम है।

अभी तक तो पहले केवल पैलेस ऑन व्हील्स था, जिसमें समाज का केवल एक खास वर्ग ही यात्रा कर सकता था, उसकी दरें हीं इतनी थीं लेकिन अब विलेज ऑन व्हील्स की परिकल्पना ,इस संदर्भ में एक बहुत ही नई और संवेदनशील शुरुआत है। यह बात सीचना कि अगर इस देश की आम जनता किसी धार्मिक स्थल या ऐतिहासिक स्थल पर जाना चाहती है तो उन्हें रियायती दरों पर, * स्लीपर की गाड़ी की इस तरह की सुविधा मिलना, ताकि वे ऐसी जगहों पर जाकर, इस प्रकार से भारत दर्शन रियायती दरों पर कर सकें, सराहनीय है।

कम खर्च और सुविधाजनक यात्राएं हों, इसमें भारतीय रेल का कोई सानी नहीं है लेकिन पिछले कुछ अरसे से ट्रेनों की बढ़ती हुई दुर्घटनाएं या हिंसक वारदातों, लूटपाट की घटनाओं से कहीं अवश्य ही एक चिंताजनक स्थिति बनी है और इस कारण पिछले वर्ष यात्रियों की संख्या में भी कमी आई है, जोकि एक चिंता की वजह है। इस पर रेल मंत्री जी को विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है। हालांकि रेल मंत्री जी ने सुरक्षा के इंतजामात के तहत कई बातें और कई घोषणाएं की है, जिसमें कि आधुनिक सिग्नल प्रणाली, प्लेटफार्मों को ऊंचा करना, रेल पर्थों का नवीनीकरण, कम्प्यूटर आधारित ट्रैफिक कंट्रोल सिस्टम, इंटरलॉकिंग प्रणाली, अतिरिक्त सुरक्षाकर्मियों की तैनाती, रेलवे क्रासिंग्स पर अतिरिक्त चौकीदारों की नियुक्तियां, पुराने पुलों का जीगोंद्वार करना या जैसाकि पहले एक बार कहा था कि रेलवे टैक पर रेल का कोई इंजन इस तरह चलेगा, जो कि यह देखता चले कि आगे कहीं कोई बाधा तो नहीं है, इस मामले में और भी जितनी कठोर कार्यवाही हो, और सरक्षा के लिए कठोर कदम उठाए जाएं, उपाय किए जाएं। ये बहुत आवश्यक हैं क्योंकि सुरक्षा का उपाय प्राथमिक है। यात्रियों के जान-माल की सुरक्षा हो, इसको प्राथमिकता से सुरक्षित करना बहुत आवश्यक है, क्योंकि पिछले कुछ अरसे से ऐसा होनं लगा है कि रेल चले जब छक-छक, करे कलेजा थुक-धुक। लोगों की यह धुकधुकी, यह डर, यह चिंता बंद होनी चाहिए ताकि ज्यादा से ज्यादा यात्री इन सुविधाओं का लाभ उठा सकें। किराएं में जो वृद्धि नहीं हुई है, उसका भी लाभ उठा सकें और अधिक से अधिक लोग निश्चित होकर पूरी सुरक्षा और सुविधा के साथ रेल में यात्रा कर सकें। इसके लिए सुरक्षा की श्रेणी में समृह ''घ'' में जो हजारों की तादाद में अभी तक रिक्तियां है, उनको प्राथमिकता से पुरा करना महत्वपूर्ण रहेगा।

मैं यह कहना चाहूंगी कि भाननीय मंत्री जी ने अनेक रेलों की घोषणा की लेकिन राजस्थान में रेलों के मामले में हमेशा की तरह अकाल सा ही रहा। राजस्थान एक ऐसा प्रदेश है जहां पर्यटन की असीमित संभावनाएं हैं। वहां बहुत लोग जाते हैं, जाना चाहते हैं।

राजस्थान में अजमेर एक ऐसा स्थान है जो दो महान तीर्थ स्थलों की संगम स्थली है। जहां तीर्थराज पुष्कर के लिए पूरे विश्व से तीर्थ यात्री आते हैं, जहां विश्व प्रसिद्ध गरीब नवाज ख्वाजा साहब की दरगाह भी है, जहां विश्व भर से जायरीन आते हैं। मैं माननीय रेल मंत्री जी से आग्रह करना चाहूंगी कि वे अजमेर पर विशेष ध्यान दें। आज अजमेर में यह स्थिति हो गई है कि मीटर गेज मे जमाने में वहां आज से अधिक रेलें चला करती थीं। अजमेर राजस्थान के हृदय में स्थित है, राजस्थान के मध्य में स्थित है इसलिए भी उसका एक ऐतिहासिक और भौगोलिक महत्त्व है।

इस बारे में मैंने पहले भी निवेदन किया है और आज फिर कहना चाहती हूं कि पूजा एक्सप्रेस

जो जयपुर से जम्मू तबी जाती है जिसमें अनेकों तीर्थ-यात्री वैष्णों देवी के दर्शन के लिए जाते हैं, यह अधिक व्यावहारिक होगा कि वह अजमेर से आरंभ हो क्योंकि जयपुर से अजमेर का फासला केवल सवा सौ किलोमीटर है। तब यह एक पूजा के स्थान से दूसरे पूजा के स्थान तक जाएगी। यहां गरीब नवाज माहब की दरगाह है और वहां माता वैष्णों देवी का मंदिर है। इस से पूरे देश में एकता और सद्भावना का संदेश जाएगा। इसलिए यह ट्रेन अजमेर से चले क्योंकि यह खाली सवा सौ किलोमीटर का फासला है। अभी होता यह है कि कई लोग समय पर जयपुर नहीं पहुंच पाते और उस ट्रेन को नहीं पकड़ पाते। इस व्यवस्था से खाली अजमेर ही नहीं बिल्क अजमेर के आसपास के 10 जिलों के लोगों को भी लाभ मिलेगा।

महोदय, अभी रेल मंत्री जी ने जो सुधार और रियायतें देने की बात कही है, मैं उन से कहना चाहूंगी कि यह सुनिश्चित करें कि इन रियायतों, सुधारों और सुविधाओं का लाभ आम आदमी तक जरूर पहुंच पाए। ऐसा न हो कि सरकारी कार्यशैली के भंवर में फंसकर आम आदमी को इन सुविधाओं का लाभ न मिल सके। आप ने हमले में मारे गए सैनिकों की विधवाओं को या इंटरव्यू के लिए जाने वाले नौजवानों को किराए में छूट देने की बात कही है, इस के संबंध में कुछ ऐसी प्रक्रिया अपनायी जाए और उसका इस तरह से सम्लीकरण हो कि उन्हें बार-बार चक्कर न काटने पडे। इसलिए जरूरी है कि घोषणाए करने के साथ ही मंत्री जी देखें कि उन पर कार्यवाही कैसे सुनिश्चित हो। महोदय, हमारे रेल मंत्री जी स्वयं भी जमीन से जुड़े हुए व्यक्ति हैं, आम आदमी से जुड़े हुए व्यक्ति हैं और काफी अनुभवों भी हैं और मुझे पूरा विश्वास है कि वह इस बात पर अवश्य गौर करेंगे।

महोदय, ट्रेनों का समयबद्ध चलना बहुत जरूरी है। आप जानते हैं कि कई बार यात्री एक ट्रेन से जाते हैं और उन्हें आगे दूसरी ट्रेन पकड़नी होती है। अब अगर वह ट्रेन समय पर नहीं आई तो यात्री उसके लिए कई घटों तक परेशान होते हैं। और उन के आगे के सारे आरक्षण धरे रह जाते हैं। इसिलए समय की पाबंदी या ट्रेनें समय पर चलें, यह सुनिश्चित करना भी बहुत आवश्यक है और व्यावहारिक भी है। इसके अलावा सुरक्षा की दृष्टि से जो कुछ भी व्यवस्थाएं इस बजट के माध्यम से की गयी हैं, उस के संबंध में में कहना चाहूंगी कि प्लेटफार्म और ट्रेन का लेवल बराबरी पर होना चाहिए। अभी कई जगह गैप रह जाता है जिस से बुजुगों, महिलाओं और बच्चों के लिए उतरना मुश्किल हो जाता है। उन के पांव कई बार उस गैप में फंस जाते हैं। इसलिए इस कठिनाई की ओर देखना बहुत जरूरी है। महोदय, एक सुझाव और देना चाहूंगी कि सीनियर सिटीजंस या 60 साल से ऊपर के लोगों के लिए पांवों की तकलीफ के कारण ऊपर की बर्ष पर चढ़ना बहुत मुश्किल हो जाता है। इसलिए हमारे बुजुगों के लिए हमें ऐसी व्यवस्था जरूर करनी चाहिए कि 60 वर्ष से ऊपर के लोगों को नीचे की ही बर्थ आवंटित की जाए। दूसरे ट्रेन में जो लोगों को रेल नीर मिलता है, वह उचित और सस्ती दर पर मिले, प्लेटफार्म पर स्वच्छ पेयजल की समुचित व्यवस्था हो और देखा जाय कि वाकयी में उसकी उपलब्धता हो। महोदय, मैं रेलवे की परियोजनाओं को दो श्रेणियों में

[7 July, 2004]

Ĺ

बांटने का सुझाव देती हूं। एक तो वे जोकि लंबे समय से लंबित परियोजनाएं हैं और दूसरी वे जोकि अविलंबनीय लोग महत्व की परियोजनाएं हैं जिन्हें कि प्राथमिकता के आधार पर पूरा किया जाना चाहिए।

महोदय, मैंने अखबार में पढ़ा कि विपक्ष के लोग यह कहते हैं कि यह बजट स्वादहीन है, रंगहोन है और गंधहोन है तो इतना मैं हो कहूंगी कि वे यह बात आम आदमी से पूछें। इस देश का हर गरीब और आम आदमी यह कह रहा है कि, ऐसा आया है रेल बजट कि हर आदमी कर रहा है फील गुड़। धन्यवाद।

उपसभाष्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): धन्यवाद। श्री पीम्जीम् नारायणन। [VICE-CHAIRMAN (SHRI BALAWANT alias BalAPTE) in the chair]

SHRI P.G. NARAYANAN (TAMIL NADU): Mr. Vice Chairman, Sir first of all, I submit that the first Railway Budget of this new Government is totally disappointing. Sir, it doesn't even have a vision of development of Indian Railways in the next five years. Indian Railways, which serves as a basic infrastructure for the movement of passenger and freight has to be strengthened considerably. But this Budget doesn't reveal any plan for its proper development. The investment plan for 2004-05 is totally unimpressive. This leads us to believe that most promises will not actually be kept.

Sir, the main feature in this Budget seems to be announcement without any proper funding. Sir, the Budget, according to me, is like an election eve Budget by not touching the passenger and freight services. I understand the problems of this Government in presenting a comprehensive Budget since they have been in office for hardly two months. The Railway Minister will do well in curbing dacoity in trains passing through Bihar. While the elections to Bihar Assembly round the corner, he should concentrate his energies in tackling dacoity in rains passing through the State. It looks like the Railway Board and the Railway Ministry belong to Bihar. Since Independence, the Railway Ministers of the country have come from the State for over 30 years. We had L.N. Mishra, Kedar Pandey, Jagjivan Ram, Ram Vilas Paswan, Nitish Kumar and now Lalu Prasad. It looks as though the Indian Railways belong to Bihar and Bihar is the Indian Railways. For example, a State like Tamil Nadu never had a full-fledged Central Cabinet Minsiter handling railways ever since independence.

1

Sir, no wonder the Railway Minister himself has acknowledged in this Budget speech that Tamil Nadu is one of the neglected States so far as development of Railways is concerned. The railways in Tamil Nadu is very backward and has nearly 75 per cent of the tracks in meter gauge. The State has the highest concentration of meter gauge in the whole of India. The entire railway track from Chennai to Kanyakumari has a single track. As far as the railway system is concerned, Tamil Nadu lives in the 18th Century. From an analysis of the fund allocation for gauge conversion projects shows that the amount allocated in the current Budget on this account is very, very meagre. At this rate of fund flow from Railways, it will take another century to complete the ongoing gauge conversion projects in Tamil Nadu.

So, Sir, the casual attitude of the Minister towards the doubling project is seen, when he sanctioned hardly Rs 3 crores for doubling of Madurai to Tindukal section which is hardly 2 per cent of the single railway line connecting Madras Egmore to Kanyakumari. This project would take 15 years to complete at this current rate of fund flow. It will take two centuries to complete the entire doubling projects from Chennai to Kanyakumarı We now talk in terms of linking Kashmir to Kanyakumari for national integration. Is this the way to allocate funds for such crucial project? Even the home town of the President of India, Dr Abdul Kalam, Rameshwaram, has received a raw deal from Lalu Prasad Yadav's Budget. He has hardly sanctioned Rs. 25 crores for the project while the total cost of the Madurai to Rameshwaram gauge conversion project is Rs. 343 crores. But in this Budget, only Rs. 25 crores is sanctioned. Sir. I, therefore, would demand a special fund be earmarked for completion of gauge conversion projects in Tamil Nadu considering the fact that over 80 per cent of the railway lines in the State is meter gauge.

The Railways are promoting the coach factory at Kapurthala at the cost of Integral Coach Factory, Perambur in Tamil Nadu While 50 years old Integral Coach Factory is languishing for want of funds now All modernisation projects of coach building are being sanctioned for Kapurthala factory only. I condemn this step-motherly treatment being given to the Integral Coach Factory in Tamil Nadu.

Another area where the State is lagging behind is the Metropolitan Railway Project. While the underground railway project in Delhi has built 80 to 90 kms. of track in the last six years, the Metropolitan Railway

System in Chennai has taken 35 years to complete 17 kms of railway track. So, Chennai city is totally neglected. The MRTS Phase-II at Chennai has been badly delayed by the Railways. The Railway Minister has already indicated that it will be completed by April, 2005. At least now, the Railways should keep up the schedule on this long delayed project. I am very sorry to say that there is no mention at all of the Chennai Pondicherry rail link via Mamallapuram. There is no indication of the Chennai-Egmore-Chennai Central rail link. Nor is there any mention of the early completion of the Cuddalore-Vridhachalam-Salem, broad gauge line. Sir, like MRTS in Chennai, the Railways should take similar projects in Coimbatore, Trichy, Madurai and Tiruneiveli. A survey for new railway line from Satyamanglam to Samraj Nagar had been completed ten years ago but the Railway Ministry is not keen in taking up this very important project which is pending for the last several years. So, I appeal to the Railway Minister to take up this project in the current year itself.

Finally, overall the Railway Budget reveals a lack of vision and no plans for the healthy development of Railways Thank you, Sir

श्री रवि शंकर प्रसाद: आदरणीय उपसभाध्यक्ष जी, रेल बजट पर बोलने के लिए आपने मुझे अवसर दिया, इसके लिए मैं आपके प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूं।

उपसभाध्यक्ष जी, मनमोहन सिंह जी की सरकार का यह पहला आर्थिक दस्तावेज़ है। कल से मैं अखबार और टेलीविज़न को देख रहा हूं तो दो बातें दिखाई पड़ रही हैं। ''रेल मंत्री, माननीय लालू प्रसाद जी की रेल चली'', ये टिप्पणियां टेलीविज़न में भी आ रही हैं, अखबारों में भी आ रही हैं। आदरणीय लालू प्रसाद जी की रेल चलना अभी बाकी है, क्योंकि उनकी गाड़ी 24 जून से चली और पिछले एक महीने के अंदर इसने कितना सफर किया, यह तो अभी देखना पड़ेगा लेकिन में एक बात के लिए उनका साधुवाद करना चाहूगा। जब मैं इस बजट भाषण को पढ़ रहा था तो इसमें दो बातें लगती हैं, इस बजट भाषण के दो व्यक्तित्व हैं और गंभीर राजनीतिक विरोध के बावजूद आदरणीय लालू प्रसाद जी ने इस बात को स्वीकारा है कि अभी तो यू॰ पी॰ ए॰ और लालू प्रसाद जी की रेल चली है, लेकिन एन॰ डी॰ ए॰ और नीतिश कुमार जी की रेल ने अच्छा काम किया है, अच्छी चली है। उन्होंने स्वयं इस बात को स्वीकारा है, मैं उसको क्वोट करके सदन का समय नहीं लेना चाहता लेकिन जो रिव्यू परफॉरमेंस की चर्चा विस्तार से हैं, उसमें तीन बातों का उल्लेख हैं– फ्रेट मूवमेंट अपने टारगेट से आगे बढ़ा, रेलवे की बचत अच्छी हुई और सुरक्षा के मामलों में जो सबसे महत्वपूर्ण बात है, उन्होंने कहा कि वर्ष 2000-2001 dh rqyuk esa the number of accidents has come down drastically in the year 2003-2004

आदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदय, यह बहुत महत्वपूर्ण विषय है कि फ्रेट मूवमेंट के विषय में, राजस्व के विषय में, सुरक्षा के विषय में-तीनों मामलों में आदरणीय रेल मंत्री माननीय लालू प्रसाद जी ने नीतिश जी की रेल को अपना आभार दिया है और यह इस कारण से हो सका कि हमने पिछले 5 वर्षों में एक बहुत मजबूत आर्थिक व्यवस्था इस देश में दी है।

श्री मूल चन्द मीणा: गए दिनों की बात छोड़िए, अब नयी बात करिए।

श्री रिव शंकर प्रसाद: आप जरा शांति से सुनिए ... (व्यवधान)... मीणा जी, जरा कभी सुना करिए। आज 8.2 परसेंट का ग्रोथ रेट सभी स्वीकारते हैं। 2003-2004 का इकर्नॉमिक सर्वे कहता है कि 'The buoyant economy ultimately created a strong foundation for a good Budget'. यह मैं बताना चाहता हूं।

श्री मूल चंद मीणा: आज यहा चर्चा रेल बजट पर हो रही है या पुराने बजट पर हो रही है?

श्री रिव शंकर प्रसाद: मीणा जी, लगता है कि आपने अपना रेल बजट नहीं पढ़ा है। यह आपके रेल मंत्री ने कहा है। जरा पढ़ा करिए, जरा होमवर्क किया कीजिए ...(व्यवधान) उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं यील्ड नहीं कर रहा हूं, I am not yielding. (Interruptions) I am not yielding.

उपसभाष्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे): आप इंटररप्ट मत करिए ...(ठ्यवधान).

श्री संजय निरुपम (महाराष्ट्र): ये बोल रहे हैं कि इनकी ट्रेन लालू जी की ट्रेन से टकराई नहीं, साथ-साथ चल रही है।

श्री रिव शंकर प्रसाद: अभी तो लालू जी की रेल चलनी शुरू हुई है, आगे देखना है। उन्होंने कई बातें कही है। एक-दो आंकड़े में अवश्य आपके सामने रखना चाहूंगा। मैं कह रहा था कि उनका जो व्यय है वह 11,265 करोड़ रुपए है और जो नॉन-प्लान एक्सपेंडिचर है, वह 41,417 करोड़ रुपए है। अब विकास तो प्लान एक्सपेंडिचर से होता है। अब नॉन-प्लान और प्लान एक्सपेंडिचर में कितना अंतर है, यह आप देख लें, यह आपके सामने है। दोनों का योग करने पर 52,080 करोड़ रुपए आता है। आपकी रेलवे की रिसीट्स कितनी हैं? आपके पास जो इतना बड़ा ह्यूज गैप है, उसे आप कैसे पूरा करेंगे? सिर्फ एक शब्दावली आपके पास है कि हमें बजट सपोर्ट मिलेगा। पिछले वर्ष का बजट सपोर्ट था लगभग 7,000 करोड़ रुपए, इस बार क्या उससे ज्यादा मिलेगा?

एक और बड़ा सवाल है, जो सवाल दीपांकर बाबू ने भी उठाया है कि 246 ऑन-गोइंग ग्रोजेक्ट्स हैं ,जिनके लिए 46,000 करोड़ रुपए की आवश्यकता है। यह पैसा कहां से आएगा। दूर रेल संपर्क योजना में 20,000 करोड़ रुपए का प्रावधान नीतिश जी ने किया था लेकिन इस बार के बजट भाषण में there is not even a whisper about that

एक और सवाल उठता है कि 72 नए सर्वें की चर्चा रेलवे बजट में हुई है। रेलवे बजट व मैं देखता हूं तो पिछले बजटों में सर्वें की चर्चा नहीं होती थी, नयी लाइनों की चर्चा होती थी। व शायद पहली बार है कि किन-किन लाइनों का वह सर्वें कराएंगे, उनको नया बनाने के लिए ए उसकी डबलिंग के लिए, उसकी चर्चा इस रेल बजट में की गई है। मैंने जानने की कोशिश की कि अब तक कितने सर्वें हुए हैं और उन पर कितना खर्च होगा। यदि पिछले 10-15 वर्षों का हिसाब हम लगाएं तो करीब डेढ़ लाख रुपया चाहिए उन प्रस्तावों के लिए जिनके सर्वें हो चुका है। तो ये जो क नए सर्वे जोड़े गए हैं, इनका क्या होगा?

महोदय, दीपांकर बाबू ने एक सवाल किया था पापुजिल्म का, क्या मतलब है इसका? उनका बड़ा सम्मान करता हूं, मैं उनकी विद्वता और उनकी प्रतिमा का बड़ा सम्मान करता हूं। उन्होंने पापुलिस्ट शब्द का प्रयोग किया था क्योंकि कल एक टेलीविजन चैनल पर हम दोनों साथ थे: शायद उसका संदर्भ मुझसे ही था। पापुलिज्म का मतलब क्या होता है? दो शब्द हैं-प्रो-पीपुल 🕫 पौपुलिस्ट। प्रो-पीपुल हम सभी हैं, होना चाहिए, लोकतंत्र में इसीलिए आए हैं। प्रो-पीपुल एंड ईमानदारी से होने का जरूरत है, लेकिन प्रो-पीपुल एक बात है, पापुलिस्ट होना दूसरी बात है और पापुलिस्ट होने का मतलब होता है दिखावे के लिए प्रो-पीपुल होना। यह एक बहुत मौलिक अंतर है इसको समझने की आवश्यकता है। जब आप कोई प्रो-पीपुल होकर काम करते हैं तो आप योजना लेकर आते हैं, उसके लिए पैसे का प्रावधान करते हैं, उसके लिए समयबद्ध कार्यक्रम में क्रियान्वयन की बात करते हैं। इसे कहते हैं प्रो-पीपुल। दूसरा होता है दिखावे के लिए कुछ बोलना। बिहार शासन लालू जी के हाथ में पिछले 12-14 वर्षों से है। कभी प्रत्यक्ष रूप से है, कभी अप्रत्यक्ष रूप से है। बिहार एकमात्र ऐसा मुख्य राज्य है जहां दो मुख्यमंत्री हैं-वैधानिक और वास्तविदा लेकिन चलता है। परन्तु जिस प्रकार से पिछले 10-15 वर्षों में बिहार का शासन चला, क्या रेट 🕾 का शासन भी वैसा ही चलेगा? एक सवाल मैं पूछना चाहता हूं। याद है एक समय माननीय रेल मंत्री जी एक बहुत अच्छा प्रस्ताव लेकर आए थे और आज मैं उनका सम्मान करता हूं उस प्रस्ताव व लिए। मैं भी उनसे प्रभावित हुआ था। भैंस चराने वालों, बकरी पालने वालों, सुअर पालने वालों पढ़ना लिखना सीखो और उन्होंने चरवाहा विद्यालय बनाया था। उनकी यह बहुत अच्छी योजन थी। हालांकि मैं उनका गंभीर राजनीतिक विरोधी हूं लेकिन ''चरवाहा स्कूल'' के प्रस्ताव का मैंने भी समर्थन किया था। आज वह स्कूल किस हालत में हैं, क्या कभी देखा है? 14 वर्षों में न कोड शिक्षक, न कोई बिल्डिंग और न कोई पढ़ने वाले छत्र, मात्र एक घोषणा की गई और वह चलता रहा। तब क्या जो इतनी बड़ी घोषणाएं की गई हैं, ये भी इसी प्रकार से चलती रहेंगी? यह एक बहुत बड़ा सवाल है। इसीलिए हम कहते हैं कि जब आप जनता के पक्ष में होकर सोचते हैं, प्रो-पीपुल होना एक बात है, पापुलिस्ट होना दूसरी बात है। यह फर्क बहुत साफ है। आदरणीय उपसभाध्यक्ष जी, एक सवाल और उठता है। इस देश में रोटी को बांटने की पॉलिटिक्स बहुत चली है। रोटी कैंसे बंटेगी? रोटी ऐसे बंटनी चाहिए। लेकिन रोटी की संख्या बढ़े यह पॉलिटिक्स आज तक नहीं हुई है और यह समझना पड़ेगा कि अगर देश को तरक्की करना है तो रोटी की संख्या बढ़ानी पड़ेगी। रोटी जब बढ़ेगी तो बांटने में कमजोरी नहीं आएगी। रोटी की तादाद कम होगी तो बांटने की लड़ाई अधिक चलेगी। Therefore, I always say that economic growth without social justice is not possible.....

श्री विजय सिंह यादव (बिहार): अगर रेल बजट आपको अच्छा लगा हो तो उस पर भी बोलिए।

श्री रवि शंकर प्रसाद: हम दूसरी बात बोल रहे हैं, आप जरा शांत रहिए। ...(व्यवधान) विजय जी, हम वहीं बोल रहे हैं। शायद थोड़ा ऊपर बोल रहे हैं।...(व्यवधान)

लेकिन सामाजिक न्याय के लिए आर्थिक विकास जरूरी है और आर्थिक विकास के लिए इंवेस्टमेंट जरूरी है, उसके लिए रेवेन्य आवश्यक है। इस पूरी दिशा का, आदरणीय दीपांकर बाबू ने जो बात की थी, उस दिशा का इस बजट में पूरा अभाव है। आदरणीय उपसभाध्यक्ष जी, मैं जब से इस पूरे बजट को सुन रहा हूं तब से एक बात साफ दिखाई पड़ रही है कि सुरक्षा जरूरी है और यह सभी ने कहा हैं लेकिन क्या हुआ? लालू जी ने 24 मई को रेल मंत्री का पदभार ग्रहण किया। उसके बाद क्या स्थिति हुई? आदरणीय उपसभाध्यक्ष जी, मैं कुछ अखबारों को देख रहा था ''जनसत्ता'' 5 जुन, 2004 ट्रेन डकैती से पसीना छूटा लालु का। यह आपके सामने है। यह मैं हिन्दुस्तान देख रहा हं ...(व्यवधान) मैं "हिन्दुस्तान" अखबार प्रस्तुत कर रहा हं । लालू को ट्रेन डकैतों की ललकार। आदरणीय उपसभाध्यक्ष जी, यह रोज की कहानी हैं मैं उस पर नहीं जाना चाहता लेकिन मैं तीन घटनाओं का जिक्र अवश्य करूंगा। 25 मई मालदा-भिवानी एक्सप्रेस, आरा-बस्तर के बीच में आए हमलावर, लूटमार की, बॉर्डर सेक्योरिटी फोर्स के इंस्पेक्टर बलवंत सिंह. जो मालदा डलेविन बटालियन का था, उसने रोकने की कोशिश की तो उसको मार डाला। क्या लालु प्रसाद जी ने आज तक बलवंत सिंह की विधवा से मुलाकात की? एक सवाल मैं पूछना चाहता हूं। 2 जून को पटना-पुरी एक्सप्रेस ट्रेन में डकैती होती है, 3 जून को दून एक्सप्रेस में एक पैसेंजर इन्द्र बहादर सिंह की हत्या होती है और एक दर्जन घायल होते हैं। यह सवाल कहा गया कि लालू जी के होते हुए ही इतनी डकैती की संख्या क्यों बढ़ गई? यह बहुत गंभीर सवाल है।...(व्यवधान)

__ **डा॰ कुमकुम राय:** क्या पिछली सरकार के समय ट्रेन डकेती की घटनाएं नहीं होती थीं? ...(व्यवधान)...

श्री रिव शंकर प्रसाद: आदरणीय उपसभाध्यक्ष जी, मुझे बोलने दिया जाये।

...(व्यवधान)...मुझे बोलने दिया जाये। मुझे बोलने दिया जाये। ...(व्यवधान)... एक मिनट, एक मिनट। मुझे बोलने दिया जाये। ...(व्यवधान)...

उपसभाष्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे): आरजेडी के नाम हैं।(व्यवधान)... बहस में भाग लेने के लिए आपके नाम हैं। उस समय आप उत्तर दीजिए।(व्यवधान)... ड॰ कुमकुम जी, आपको भी अवसर मिलेगा। ...(व्यवधान)... आपको भी अवसर मिलेगा। बीच में टोकने की जरूरत नहीं है। उनको भाषण पूरा करने दीजिए। ...(व्यवधान)... श्री रवि शंकर जी, आप शुरू करिए। ...(व्यवधान)...

श्री रिव शंकर प्रसाद: हो गया, हो गया। ...(व्यवधान)... उपसभाध्यक्ष जी, मैं इसलिए कह रहा हूं कि यह इतना गंभीर वाकया था और आदरणीय रेल मंत्री लालू प्रसाद के दो घंटे के वक्तव्य में रेल के अंदर बढ़ते हुए अपराध पर एक शब्द नहीं है।...(व्यवधान)... यह बहुत गंभीर मामला है।...(व्यवधान)...

हा॰ क्मक्म राय: उपसभाध्यक्ष जी, ...(व्यवधान)...

उपसभाष्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे): आप क्यों बीच में बोल रही हैं? ...(व्यवधान)... यह तो भावण पर बोल रहे हैं।...(व्यवधान)... आप बीच में क्यों बोल रही हैं? ...(व्यवधान)... आप भाषण करो। ...(व्यवधान)... आप बाद में बोल सकते हैं। आपको इंटरप्ट करने की जरूरत नहीं है। ...(व्यवधान)... आपको भी मालूम है। ...(व्यवधान)...

श्री रवि शंकर प्रसाद: उपसभाध्यक्ष जी, मुझे आपका संरक्षण चाहिए।...(व्यवधान)... मुझे अपनी बात बोलने दी जाये।...(व्यवधान)...

उपसभाष्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे): हो गया, हो गया। कुमकुम जी, आपको बोलने का अवसर मिलेगा।...(व्यवधान)... वे बजट पर ही बोल रहे हैं। आप ठीक से सुनिये।...(व्यवधान)... बात बजट की ही है। संभव है आपकी उस पर सहमति न हो, लेकिन बात बजट की ही चल रही है।...(व्यवधान)... आप बैठिये। आप उनको भाषण पूरा करने दीजिए।...(व्यवधान)...

प्रो॰ राम देव भंडारी: रवि जी, हम उम्मीद करते हैं कि आप अच्छी बार्ते बोलेंगे। आप यह क्यां कह रहे हैं? ...(व्यवधान)...

वपसभाष्यक्ष (श्री बलवंत ठर्फ बाल आपटे): कुमकुम जी, हो गया।...(व्यवधान)...

श्री रिव शंकर प्रसाद: आदरणीय उपसभाध्यक्ष जी, ...(व्यवधान)... यह बात मैं इसलिए कह रहा था कि सुरक्षा राजनीति से इतर होनी चाहिए। रेलवे में हम भी चलते हैं, सभी चलते हैं। आज यह बहुत पीड़ा का विषय है कि इतने लंबे भाषण में 24 जून के बाद रेलवे में बढ़ते हुए अपराध और उसकी रोकथाम की कोई चर्चा नहीं है। जीआरपी राज्य सरकार के अन्तर्गत होती है, रेलवे प्रोटेक्शन फोर्स की एक सीमा होती है। बिहार में किसका शासन है, पुलिस किसके अन्तर्गत है, यह बताने की आवश्यकता नहीं है। अभी एक जगह मैंने देखा ...(व्यवधान)...

डा॰ क्मक्म राय: उपसभाध्यक्ष महोदय, ...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे): आप बीच में क्यों बोल रहे हैं? ... (व्यवधान)... नहीं, नहीं, यह ठीक नहीं है।...(व्यवधान)... कुमकुम जी, यह ठीक नहीं है।... (व्यवधान)... यह बिल्कुल ठीक नहीं है।...(व्यवधान)...

श्री रविशंकर प्रसाद: आदरणीय सभापति जी, मैं बात कह रहा था कि यह गंभीर विषय है। एक जगह पर देखा बिहार की आदरणीय मुख्यमंत्री जी का स्टेटमेंट देखा कि इसको कैसे रोका जाये? एक जगह देखा आदरणीय लालू प्रसाद जी का वक्तव्य कि विश्वकर्मा भगवान की पूजा की जाये। क्या सुरक्षा विश्वकर्मा भगवान की पूजा तले चलेगी? यह गंभीर सवाल है। मैं बहुत सीधा सवाल पृछना चाहता हूं, I want to put a question to the hon. Minister of State for Railways, who is present here. My query is this. In the light of these spat of fresh accidents, did the hon. RailwayMinister call a meeting of the Bihar Chief Minister, Bihar Senior Police Officers and officers of the adjoining areas of West Bengal, Jharkhand and Uttar Pradesh to come with a timebound strategy to contain it? इसका कोई स्वर नहीं दिखाई पडता। इसलिए मैं कहता हं कि क्या यह संकेत जा रहा है। वे अपराध इसलिए कर रहे हैं कि उनके दिमाग में एक बात आई कि जिस तरह से बिहार की सरकार चल रही है, जिस तरह से बिहार का प्रशासन चल रहा है...। हमारे खिलाफ कार्यवाही नहीं होगी। अगर यह संकेत जाता है तो दर्भाग्यपूर्ण है, इसको रोकने की आवश्यकता है।..(व्यवधान)... में बहुत...प्रो॰ सम देव भंडारी: बिहार की जनता आपको पहचानती है। उन्होंने आपको रिजेक्ट कर दिया है।...(व्यवधान)...बिहार की जनता ने आपको रिजेक्ट कर दिया है।...(व्यवधान)...

उपसभाष्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे): आप बीच में क्यों बोल रहे हैं? ...(व्यवधान)...यह बिल्कुल ठीक नहीं है।

प्रो॰ राम देव भंडारी: कहां से कहां चले गए, यह दिखाई नहीं दे रहा है।...(व्यवधान)...

श्री रुद्र नारायण पाणि: आपको भी रिजेक्ट कर चुके हैं।..(व्यवधान) उपसभाध्यक्ष महोदय, इनको भी कई बार रिजेक्ट कर चुके हैं।...(व्यवधान)... लोक सभा चुनाव में आपको भी कई बार रिजेक्ट कर चुके हैं।...(व्यवधान)... प्रो॰ राम देव भंडारी: कैसे रिजेक्ट किया आप लोगों को। जनता के बीच में जाइये और वहां कुछ काम कीजिए। ...(व्यवधान)...मिश्र जी, उनको किहए कि जनता के बीच में जाएं।

उपसभाध्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे): राम देव जी हो गया, ...(व्यवधान).. आपकी बात हो गयी है। आपको जो कहना था, कह चुके हैं। अब उनका भाषण होने दो।

श्री रिव शंकर प्रसाद: आदरणीय महोदय, राम देव भंडारी जी विद्वान व्यक्ति हैं। मैं उनका बहुत सम्मान करता हूं। राजनैतिक विरोध अपनी जगह होगा, लेकिन मेरा व्यक्तिगत सम्मान उनके लिए बहुत है। आज उन्होंने एक बहुत बड़ी बात कह दी है कि काम करिए और वोट पाइए। क्या वे बिहार में काम करके वोट पा रहे हैं? यह एक बड़ा सवाल है। इसकी चर्चा हम कभी और करेंगे।. (व्यवधान)...

डा॰ कुमकुम राय: जनता ने अपपको रिजेक्ट कर दिया है...(व्यवधान)....

श्री रिव शकर प्रसाद: आदणीय उपसभाध्यक्ष महोदय, एक बात सामने आयी है कि रेलवे प्रोटेक्शन फोर्स की नियुक्ति की प्रक्रिया को बदला गया है। मुझे इसके बारे में दो बार्ते कहनी हैं। यह प्रक्रिया पहले रेलवे के पदाधिकारियों के पास थी। My question to you, Mr. Minister of State, is this: Is it not a fact that because of large-scale irregularities committed by the officers of the Railway Protection Force, this job of recruitment was given to the Railway Recruitment Board? And) if that was the procedure emanating because of irregularity, why has the process been restored again? आदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदय, 90 के दशक में बिहार में बड़ी संख्या में दारोगा के पद पर नियुक्ति हुई थी। मामला हाई कोर्ट में आया। हाई कोर्ट ने स्ट्रिक्वर पास कर दिया। काफी जमकर मामले की जांच की गयी। बहुत लोगों की शारीरिक बनावट उसके लायक नहीं पाई गयी। स्ट्रिक्वर पास हुए। अनुभव ताता है कि नियुक्ति की प्रक्रिया में पारदर्शिता जरूरी है क्योंकि आदरणीय रेलवे मंत्री ने अपने भाषण में पारदर्शिता की बात कही है। यह रेलवे की बात है।

श्री मंगनी लाल मंडल: बिहार में दरोगा की नियुक्ति में जितनी पारदर्शिता बस्ती गयी थी, अब तक नहीं बस्ती गयी है।

श्री रिव शंकर प्रसाद: अब फिर मुझे जजमेंट लेकर आना पड़ेगा। क्या स्ट्रिक्चर हुआ था, मुझे जजमेंट लेकर आना पड़ेगा। आप नए-नए हैं, अभी छोड़ दीजिए।

श्री मंगनी लाल मंडल: आपकी पीड़ा यही है।...(व्यवधान)...बेटा दारोगा क्यों बन गया। यह पीड़ा अभी तक आप झेल रहे हैं। इस दम्भ से कभी तो उभरिएगा।...(व्यवधान)...लालू जी से ...बड़ी पिटाई खाइएगा जनता के द्वारा...(व्यवधान)... **श्री रवि शंकर प्रसाद:** महोदय, ये कैसे शब्द का प्रयोग कर रहे हैं? (व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे): यह ठीक नहीं हैं।

श्री रवि शंकर प्रसाद: इसे एक्सपंज किया जाए...(व्यवधान)...

श्री अजय मारू (झारखंड) इस तरह की भाषा का प्रयोग क्यों कर रहे हैं?

उपसभाध्यक्ष: श्री बनबेज एर्फ बाल आपटे यह ठीक नहीं है। बिल्कुल ठीक नहीं है।... (व्यवधान)...रामदेव जी, आप भी बैठिए। इनका भाषण पूरा होने दीजिए।...(व्यवधान)... बाकी सब लोग बैठिए। राम देव जी, आप भी बैठिए।...(व्यवधान)...

प्रो॰ राम देव भंडारी...जनता के द्वारा कहा गया है, लालू जी के द्वारा नहीं कहा गया है।.. (व्यवधान)...

श्री रुद्र नारायण पाणि: लोक सभा चुनाव में आप कितनी बार हारे। (व्यवधान)...

उपसभाष्यक्ष (श्री बलवंत ठर्फ बाल आपटे): बस हो गया। ...(व्यवधान)... आप लोग बैठिए। उनका भाषण पूरा होने दो। ...(व्यवधान)... छोड़ो, छोड़ो। अरे भाई, रवि शंकर जी का भाषण है....(व्यवधान)...

श्री रिव शंकर प्रसाद: मंडल जी हमारे मित्र हैं। बिहार से आए हैं, अच्छे वक्ता भी हैं। लगता है अति उत्साह में बोल गए होंगे। अपनी बात को वापस ले लेंगे। कोई बड़ी बात नहीं है।

श्री राजीव शुक्ल (उत्तर प्रदेश) महोदय, मैं थोड़ा देर से आया। मुझे समझ नहीं आ रहा कि रेल बजट पर बहस हो रही है या बिहार पर बहस हो रही है।

उपसभाष्यक्ष: (श्री बलबंत उर्फ बाल आपटें): आप थोड़ा समय सुन लेंगे तो समझ में आएगा। थोड़ा सुन तो लीजिए तब समझ में आएगा।

श्री रिव संकर प्रसाद: आदरणीय उपसभाध्यक्ष जी, मुझे मालूम है कि रेल के बजट में राजनीति होती है। कुल्हड़ से किसी को विरोध नहीं है। स्वयं कहा गया कि जार्ज फर्नान्डीज ने इंट्रोडयूस किया था—राजधानी में, बाकी ट्रेनों में खाने में कुल्हड़ में दही आया करता था। कुल्हड़ आना चाहिए, खादी आनी चाहिए, कुल्हड़ की राजनीति नहीं होनी चाहिए—सवाल इसका है और इसीलिए में एक बात पूछता हूं कि अगर लालू प्रसाद जी ने हमारे प्रदेश बिहार के लिए संदेश देने की कोशिश की है तो में उसका स्वागत करता हूं। एक नेक सवाल और पूछता हूं कि दस हज़ार करोड़ रुपए से अधिक की जो योजनाएं एन.डी.ए, की सरकार के द्वारा बिहार के लिए दी गई थीं, उसके बारे में कभी गंभीरता दिखाई गई है? नवीनगर, एन.टी.पी.सी. पावर प्लांट एक हज़ार मेगावाँट का—उसके लिए फंड का क्या प्रावधान हो रहा है? गंगा नदी पर पटना में ब्रिज, मुंगेर में रेल पर ब्रिज

RAJYA SABHA

और कोसी पर रेल क्रिज का प्रावधान है—इनके लिए पैसों के आंवटन में कोई बढ़ोत्तरी की गई है क्या? ये बड़े गंभीर सवाल हैं।

अंत में उपसभाष्यक्ष जी, मुझे इस पूरे मामले को एक और गंभीरता से कहना है। हम लोग राजनीति में है तो विरोध तो होगा L..(व्यवधान)...

उपसभाष्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे): रेल बजट की बात चल रही है, उन्होंने रेलवे ब्रिज की बात की है...रेलवे ब्रिज की बात की है।

श्री मूलचन्द मीणा: गंगा पर तो ब्रिज बनना ही चाहिए।

श्री रिव शंकर प्रसाद: आदरणीय उपसभाध्यक्ष जी, छपरा में रेलवे के पहिए का कारखाना रहना चाहिए लेकिन कारखाने के लिए बिजली की भी जरूरत होती है। बिजली भी आनी चाहिए, यह भी समझने की जरूरत है।...(व्यवधान)...

प्रो. सम देव भंडारी: आप चिंता मत कीजिए। आप चिंता मत कीजिए। पांच साल आप आसम कीजिए।

उपसभाष्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे): नहीं, हर व्यक्ति का एक काम होता हैं उनका काम प्रश्न पूछने का है।...(व्यवधान)...राम देव जी, उनका काम प्रश्न पूछने का है, उत्तर देने का काम रेल मंत्री जी का है, आपका नहीं है। वे अपना काम करेंगे। ये प्रश्न पूछने का काम कर रहे हैं, उनको अपना काम करने दीजिए उनको उत्तर देने का काम आपका नहीं है। आपके रेल मंत्री उनको उत्तर देंगे...(व्यवधान)..

प्रो. राम देव भंडारी: एकाएक पावर से चले गए हैं तो उसकी दवा तो मेरे पास नहीं है, उसकी दवा तो जनता करेगी:

उपसभाध्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे): रेल मंत्री उनको उत्तर देंगे। आपके रेल मंत्री समर्थ हैं, वे उत्तर देंगे। ...(ठ्यवधान)...

श्री राजू परमार: रिव शंकर जी, आपकी पीड़ा हम समझते हैं, आप अभी पावर में नहीं हैं। उपसभाष्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे): सबको उत्तर देने की जरूरत नहीं है। किसी को भी उत्तर देने की जरूरत नहीं है।

प्रो. राम देव भंडारी: देखिए, वे मेरे मित्र हैं। वे अंग्रेजी भी अच्छी बोलते हैं, हिंदी भी अच्छी बोलते हैं, भाषण जी अच्छा करते हैं मगर अभी बहुत पीड़ित हैं।

उपसभाध्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे): ठीक है।

श्री रिव शंकर प्रसाद: कोई पीड़ा नहीं है, चिंता मत करिए। उपसभाध्यक्ष जी, मेरा अंत में आग्रह यही है कि घोषणाएं करने का अधिकार सत्ता दल को है। सत्ता में हम भी रहेंगे, आप भी रहेंगे। कोई भी आता रहेगा। आज वे हैं, कल यहां आएंगे, परसों हम वहां जाएंगे—यह तो प्रिकिया है लोकतंत्र की लेकिन...(व्यवधान) ..

प्रो. राम देव भंडारी: यही बात तो समझने की है। इसी बात को तो समझना है।

श्री रिव शंकर प्रसाद: लेकिन अभी आप कांग्रेस में नए-नए हैं, थोड़ा शांत रहिए आप। मेरा आपसे कहना है आदरणीय उपसभाध्यक्ष जी कि हम जब घोषणाएं करते हैं तो जनता हमें अपनी घोषणाओं की मर्यादाओं पर कसती भी है और मुझे एक सबसे बड़ी पीड़ा यह है कि इस पूरी बजट स्पीच में इन घोषणाओं को टाइम बाउंड रूप से कियान्वित करने का कोई स्वरूप नहीं दिखाई पड़ता। अत: इसकी दिशा भटकाव की दिशा है। अभी मैं इरादे की बात नहीं करता, मैं दिशा की बात करता हूं। इसलिए आदरणीय रेल मत्री जी से मैं जरूर आग्रह करूंगा कि उन्होंने जो इतनी घोषणाएं की हैं, जो जनता के हित में करने की कोशिश की है, इसका कालबद्ध, समयबद्ध कार्यक्रम क्या है और इसके लिए पैसे की उपलब्धता क्या है, इस पर अवश्य सदन को बताने की कृपा करेंगे। उपसभाध्यक्ष जी, आपने समय दिया, इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

उपसभाष्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे): पांच बजने में एक-डेढ़ मिनट है। राम मोहन राव जी आपका भाषण तो नहीं हो पाएगा, समय चाहिए आपको, इसलिए अभी हम चर्चा समाप्त करेंगे A Further discussion on the Railway Budget will continue on 12th July, 2004

The House stands adjourned till 1 30 P M tomorrow, the 8th July, 2004

The House then adjourned at fifty-nine minutes past four of the clock till thirty minutes past one of the clock on Thursday, the 8th July, 2004